श्री गिरनार जी तीर्थ यात्रा

विशुद्ध विभव ज्ञान देशना के साथ विवरण एवं संस्मरण सहित

यात्रा स्मरणिका

आर्यिका श्री 105 ओम श्री माताजी

(संघस्थ संस्कृताचार्य श्रमण श्री 108 विभव सागर जी मुनि महाराज)

कृति

स्वानुभव

शुभाशीष

संस्कृताचार्य श्रमण श्री 108 विभव सागर जी मुनि महाराज

कृतिकार

आर्यिका श्री 105 ओम श्री माताजी

ई - संस्करण

प्रथम - 2024

संपादक एवं डिजाइनर

पी. के. जैन 'प्रदीप'

प्रकाशक एवं मुद्रक

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.), ठाणे, मुंबई - 400601.

संपर्क सूत्र - 9324358035

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज

परम पूज्य संस्कृताचार्य श्रमण श्री 108 विभव सागर जी महाराज

परम पूज्य आर्यिका श्रमणी श्री 105 ओम श्री माता जी

(संघस्थ संस्कृताचार्य श्रमण श्री 108 विभव सागर जी मुनि महाराज)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय एवं दिनांक	पृष्ठ संख्या
1.	(19/11/2018) गुलालवाड़ी से ताडदेव विहार	
2.	(20/11/2018) ताडदेव से कमाठीपुरा प्रवेश	
3.	(21/11/2018) कमाठीपूरा से वरली प्रवेश चर्या	
4.	(22/11/2018) वरली से खार प्रवेश चर्या	
5.	(23/11/2018) खार से साकीनाका	
6.	(25/11/2018) साकीनाका चर्या	
7.	(26/11/2018) साकीनाका से गोरेगाँव प्रवेश	
8.	(28/11/2018) बुधवार – " राम कथा गोरेगाँव में "	
9.	(29/11/2018) गुरुवार गोरेगाँव से विहार	
10.	(30/11/2018) बोरीवली , मुंबई प्रवेश	
11.	(01/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
12.	(02/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
13.	(03/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
14.	(04/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
15.	(05/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
16.	(08/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
17.	(09/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
18.	(10/12/2018) बोरीवली , मुंबई	
19.	(16/12/2018) बोरीवली से विहार मीरा रोड, मुंबई	
20.	(17/12/2018) मीरा रोड से भायंदर, मुंबई विहार	
21.	(18/12/2018) चर्या	
22.	(19/12/2018) मीरा रोड से पोदनपुर, मुंबई विहार	
23.	(20/12/2018) पोदनपुर से भांडुप, मुंबई प्रवेश	
24.	(22/12/2018) भांडुप, मुंबई प्रवेश – चर्या	
25.	(22/12/2018) भांडुप, विश्राम	
26.	(23/12/2018) रविवार भांडुप से थाणा प्रवेश -चर्या	
27.	(24/12/2018) सोमवार भिवंडी प्रवेश -चर्या -विहार	
28.	(25/12/2018) मंगलवार पड़घा चर्या विहार कलश मंदिर	
29.	(26/12/2018) बुधवार वाशिंद प्रवेश	
30.	(27/12/2018) गुरुवार धामणी विश्राम खर्डी फाटा विश्राम	
31.	(28/12/2018) शुक्रवार ईगतपुरी प्रवेश चर्या	
32.	(29/12/2018) शनिवार घोटी प्रवेश चर्या गोंदे विश्राम	

नमोकार ... सेवा समिति (रजि.) मुंबई

33.	(30/12/2018) रविवार, अंबड़ प्रवेश चर्या म्हसरुल विश्राम	
34.	(31/12/2018) सोमवार, सिद्ध क्षेत्र गजपंथा प्रवेश चर्या	
35.	(01/01/2019) मंगलवार, सिद्ध क्षेत्र श्री गजपंथा	
36.	(02/01/2019) बुधवार, सिद्ध क्षेत्र श्री गजपंथा से विहार	
37.	(03/01/2019) गुरुवार आडगाँव प्रवेश	
38.	(04/01/2019) शुक्रवार पिंपलगाँव चर्या	
39.	(05/01/2019) शनिवार णमोकार तीर्थ चर्या	
40.	(06/01/2019) रविवार चांदवड चर्या	
41.	(07 /01/2019) सोमवार वाखरी चर्या	
42.	(08/01/2019) मंगलवार सटाणा चर्या	
43.	(09/01/2019) बुधवार ताहराबाद चर्या	
44.	(10/01/2019) गुरुवार ऋषभदेवपुरम् चर्या	
45.	(10/01/2019) गुरुवार श्री मांगीतुंगी सिद्ध क्षेत्र प्रवेश – चर्या	
46.	(16/01/2019) बुधवार ऋषभदेवपुरम् चर्या	
47.	(17/01/2019) गुरुवार समोडे ताहराबाद चर्या	
48.	(18/01/2019) शुक्रवार विसरवाड़ी चर्या	
49.	(20/01/2019) शनिवार महमुन्ना चर्या	
50.	(21/01/2019) सोमवार प्यारा चर्या	
51.	(22/01/2019) मंगलवार बीजापुर चर्या	
52.	(23/01/2019) बुधवार महुवा जी चर्या	
53.	(24/01/2019) गुरुवार महुवा जी चर्या	
54.	(25/01/2019) शुक्रवार महुवा जी से विहार	
55.	(26/01/2019) शनिवार पर्वत पाटिया सूरत प्रवेश – चर्या	
56.	(27/01/2019) रविवार सूरत प्रवेश	
57.	(28/01/2019) सोमवार सूरत	
58.	(29/01/2019) मंगलवार सूरत, पर्वत पाटिया से विहार	
59.	(30/01/2019) बुधवार प्रवास	
60.	(01/02/2019) शुक्रवार भाड़ोल अलवागाँव स्कूल में विश्राम	
61.	(02/02/2019) शनिवार सजोद प्रवेश चर्या सम्पन्न हुई	
62.	(03/02/2019) रविवार अंकलेश्वर प्रवेश	
63.	(04/02/2019) सोमवार भरूच	
64.	(04/02/2019) सोमवार हिंगलोट चर्या	
65.	(05/02/2019) मंगलवार भैसली सांयकाल जोलवा	
66.	(06/02/2019) बुधवार जोलवा सांयकाल दहेज	
67.	(07/02/2019) गुरुवार दहेज – मीठी तलाई	
68.	(08/02/2019) शुक्रवार घोघा प्रवेश	
69.	(09/02/2019) शनिवार भावनगर सांयकाल नवागाँव	
70.	(10/02/2019) रविवार सीहोर सांयकाल कलिया	
71.	(11/02/2019) सोमवार चामुण्डा धाम सांयकाल पालीताणा	

72.	(12/02/2019) मंगलवार पालीताणा विश्राम	
73.	(13/02/2019) बुधवार पालीताणा शत्रुंजय बिसाहुमड धर्मशाला	
74.	(14/02/2019) गुरुवार मानगढ़ सांयकाल गरियाधार	
75.	(15/02/2019) शुक्रवार चारोड़िया सांयकाल मोरीगंडा	
76.	(16/02/2019) शनिवार मोरीगंडा चर्या	
77.	(17/02/2019) रविवार आहारचर्या लालवदर, अमरेली खादवाड़ी	
78.	(18/02/2019) सोमवार पाणीया प्रवेश चर्या	
79.	(19/02/2019) मंगलवार बगसरा चर्या	
80.	(20/02/2019) बुधवार पिपलिया चर्या	
81.	(21/02/2019) गुरुवार विलख से चलकर पादड़ी भव्य मिलन	
82.	(21/02/2019) गुरुवार जूनागढ़ गुजरात प्रवेश सांयकाल	
83.	(22/02/2019) शुक्रवार जूनागढ़ से गिरनार विहार भव्य मिलन, प्रवेश	
84.	(22/02/2019) शुक्रवार सांयकाल	
85.	(23/02/2019) शनिवार पर्वत वंदना	
86.	(25/02/2019) सोमवार श्री गिरनार भूमि से जूनागढ़	
87.	(27/02/2019) बुधवार आशापुरा आहार चर्या	
88.	(28/02/2019) गुरुवार जेतपुर में चर्या (पेट्रोल पम्प)	
89.	(01/03/2019) शुक्रवार जेतपुर आहार चर्या	
90.	(02/03/2019) शनिवार गोंडल चर्या	
91.	(03/03/2019) रविवार रामोद आहार चर्या	
92.	(04/03/2019) सोमवार आटकोट आहार चर्या	
93.	(05/03/2019) मंगलवार देवापुर आहार चर्या	
94.	(06/03/2019) बुधवार विंछिया आहार चर्या	
95.	(07/03/2019) गुरुवार पालियाड चर्या	
96.	(08/03/2019) शुक्रवार उमरला आहार चर्या	
97.	(09/03/2019) शनिवार राणपुर चर्या	
98.	(10/03/2019) रविवार कडोल श्वेताम्बर तीर्थ आहार चर्या	
99.	(11/03/2019) सोमवार केदरा चर्या	
100.	(12/03/2019) मंगलवार वोरु छोटा आहार चर्या	
101.	(13/03/2019) बुधवार इन्द्रनज आहार चर्या	
102.	(14/03/2019) गुरुवार तारापुर आहार चर्या	
103.	(16/03/2019) शनिवार आहार चर्या	
104.	(17/03/2019) रविवार अलकापुरी बड़ौदा चर्या	
105.	(18/03/2019) सोमवार मूलाचार – अलकापुरी बड़ौदा	
106.	(19/03/2019) मंगलवार अलकापुरी चर्या	
107.	(20/03/2019) बुधवार सन्मति पार्क बड़ौदा चर्या	
108.	(22/03/2019) शुक्रवार पावागढ़ प्रवेश सिद्ध क्षेत्र	
109.	(23/03/2019) शनिवार पावागढ़ चर्या	
110.	(24/03/2019) रविवार पावागढ़ चर्या	

111.	(25/03/2019) सोमवार श्री अतिशय क्षेत्र बेड़ियाँ जी प्रवेश चर्या	
112.	(26/03/2019) मंगलवार गोधरा चर्या	
113.	(27/03/2019) बुधवार गोधरा से विहार	
114.	(28/03/2019) गुरुवार पंचेला चर्या	
115.	(29/03/2019) शुक्रवार लिमखेड़ा चर्या	
116.	(30/03/2019) शनिवार दाहोद गुजरात	
117.	(31/03/2019) रविवार दाहोद गुजरात	

प्रत्येक जैन की हार्दिक भावनाओं का कंठाहार बना काव्य सृजन

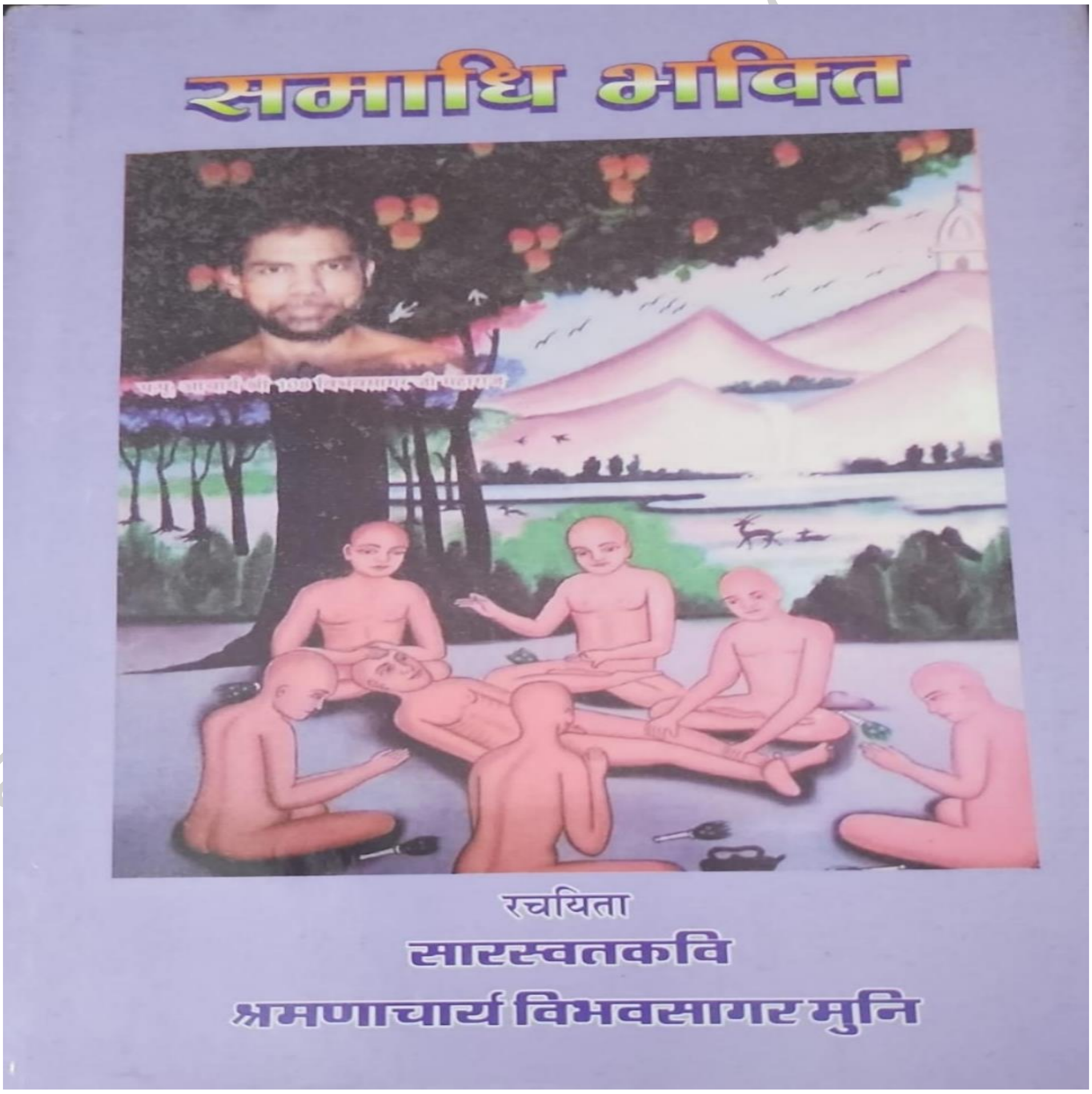

संपादकीय

अहो ! गुरुदेव की आज्ञा हो और शिष्य के लिए पालन करना, कितना सुखद एहसास है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता हैं। श्रमणाचार्य श्री 108 विभव सागरजी महाराज जी की हम पर विशेष अनुकंपा के कारण ही यह कृति के सम्पादन, डिजाइन का कार्य मुझे मिला, मैं तो धन्य हो गया। जिस जीव को जिनेन्द्रदेव के दर्शन का लाभ मिले, निर्ग्रंथ गुरुओं का सानिध्य मिले तो वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है और गुरुदेव ने तो मुझे सौभाग्यशाली बना ही दिया। मुझे मालामाल कर दिया.

प्रस्तुत कृति को स्वानुभव से लिपिबद्ध करने का महान कार्य तो आर्यिका श्री 105 ओमश्री माताजी ने अथक परिश्रम से किया हैं. अविराम लगभग 5 माह के करपात्री और पदयात्री श्रमणाचार्य श्री 108 विभव सागरजी महाराज जी ससंघ के साथ विहार करते हुए स्वानुभव को शब्द प्रदान करना और मार्ग में हुए आध्यात्मिक सूक्ष्म चिंतन को अल्प वाक्यों में जिनागम प्रस्तुत करना, अध्यात्म विद्या को सरल शब्दों में समझाना, अपने आप में बेजोड़ कला पर कार्य कुशलता को दर्शाती हैं। आप स्वयं तो संसार भ्रमण का विभाव कर ही रही हैं और इस कृति के लेखन से बहुत से भव्य जीवों का भी मोक्ष मार्ग को प्रशस्त कर रही हैं। यह तो गुरुओं की वात्सल्यता से दुर्लभ अमृत रसायन सहज ही प्राप्त हो रहा हैं। इसलिए ही आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी के शब्दों में - जगति में विख्यात सिद्धांत है कि –“जिसके पास जो होता हैं, वह वही देता हैं।” अत: जीवन में शोभायमान उत्कृष्ट स्थान पाने के लिए सद्-संगति का पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। देव, शास्त्र और गुरुओं का सानिध्य सदैव प्राप्त करते रहना चाहिए और परम पूज्य **संस्कृताचार्य श्रमण श्री 108 विभव सागर जी मुनि महाराज** का लोक विख्यात चिंतन का मनन, करना चाहिए – **“तेरी क्षत्रच्छाया भगवन् मेरे सिर पर हो, मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो”**

यही आगम कि सम्यक् नीति हैं। चिंता रहित चिंतन और गुण वृद्धि के साथ-साथ सुखद वचनामृत का वर्धन सभी जीवों को मिले ऐसी शुभ भावनाओं के साथ -

गुरु चरण चंचरीक
पी. के, जैन ‘प्रदीप’
अध्यक्ष : नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई
निदेशक : अंतर्राष्ट्रीय जैन शोध विद्वत परिषद्
संपादक एवं प्रकाशक : नमोस्तु चिंतन एवं विशुद्ध ज्ञान प्रवाह
आध्यात्मिक निशुल्क मासिक पत्रिका एवं ज्ञान -पत्र
ठाणे, मुंबई, भारत. 02 अक्टोबर2024 मो. 9324358035

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(19/11/2018) गुलालवाड़ी से ताडदेव विहार

प्रातः काल की बेला में, आँखों को तृप्त करने वाला जिन अभिषेक हुआ। पूज्य गुरुवर का मंगलमयी भाव विभोर करने वाला मंगल उपदेश हुआ, जो कर्ण में प्रवेश करता हुआ परिणाम को संभालने वाला हुआ। गुलालवाड़ी में गुरुवर ने स्वाध्याय में रुचि जगायी। सभी के गुलाब की तरह चेहरे खिले।

गुलाबबाई का लाल
गुलालवाड़ी में आ गया
गुलाब - सी
बिखेरने खुशबू!
खुशबू संयम की
सौगात लिए
अब क्या?
गमन का क्षण
गुलालवाड़ी में आ गया
लेकिन गुरुवर के गिरनार
गमन का सौभाग्य
गुलाब बाई के लाल का
गुलालवाड़ी ने
पा लिया।

गुरुवर का विहार ताड़देव बोर्डिंग की ओर हुआ। गुरुवर का वहाँ प्रवचन हुआ। प्रथम ध्वनि गुरुवर के मुखारबिंद से मुखरित हुई, यहाँ तरुवर है, वहाँ प्रभुवर है, यहाँ गुरुवर विराजमान है वहाँ प्रभुवर विराजमान हैं। इस तरह के मांगलिक प्रवचन में गुरुदेव ने आगे कहा-

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

तरुवर की पवन
गुरुवर के प्रवचन
ऑक्सीजन का काम करते हैं ।
श्वाँस के बिना
पल दो पल
रहा जा सकता है।
लेकिन गुरुवर के बिना
एक पल भी रहा नहीं
जा सकता ।
गुरु भक्ति
शिष्य के माथे
का सिंदूर हुआ
करती है ।
गुरुवर कैसे है
ये महत्त्वपूर्ण नहीं
गुरु भक्ति हमारी कैसी है,
यह महत्त्वपूर्ण है ।

(20/11/2018) ताडदेव से कमाठीपुरा प्रवेश

प्रातः कालीन बेला में, गुरुवर का कमाठीपुरा, तेलगू भवन में प्रवेश हुआ । आज आचार्य भगवन् सन्मतिसागर जी महाराज का मुनि दीक्षा दिवस था। आचार्य विरागसागर जी का आचार्य पदारोहण दिवस था । आचार्य छत्तीसी विधान सम्पन्न

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

हुआ। लगभग सात सौ लोग सम्मिलित हुये। पूज्य गुरुवर ने भाव-भीनी देशना का रसपान कराया। समर्पण के स्वर सुंदर शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत हुये।

पूज्य गुरुवर ने बतलाया कि आचार्य तपस्वी सम्राट के दर्शन का सौभाग्य उन्हें कानपुर, कचनेर, करगुआँ, औरंगाबाद में प्राप्त हुआ। जिनके दर्शन से आँखे धन्य हो जाती हैं। जिनको सुनने से कान धन्य हो जाते हैं। वास्तव में कहा जाये तो तपस्वी सम्राट की तपस्या, तपस्वी सम्राट जैसी ही है। तपस्वी सम्राट का अप्रकट स्नेह शिष्यों पर बना रहता था। वह सच्-चे शिष्यों के अनुभव का विषय है।

समर्पण की भाषा नहीं होती।
समर्पित को कोई आशा नहीं होती॥

दोपहर स्वाध्याय में पूज्य गुरुवर ने बतलाया कि-

भोजन का समय निश्चित है।
विहार का समय निश्चित है।
सामायिक का समय निश्चित है।
सोने का समय निश्चित है।
स्वाध्याय का समय निश्चित है।
तो फिर समता का समय निश्चित क्यों नहीं है।

हर समय समता होनी चाहिए। क्योंकि जिस समय समता नहीं उस समय साधु नहीं। समता ही साधुता की पहचान है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(21/11/2018) कमाठीपुरा से वरली प्रवेश चर्या

वरली प्रवेश हुआ गुरुवर का,
अभिषेक हुआ प्रभुवर का ।

पूज्य गुरुवर के प्रवचन हुये ।

"बह्वारम्भ परिग्रहत्वं नारकस्यायुष्य:" (त.सूत्र-15/6 अध्याय)

सूत्र पर प्रवचन हुये। पूज्य गुरुवर ने कहा -

प्रियबंधुओं!

माला मंजिल पर (मंजिल) माला बनाओ, लेकिन परिग्रह तो कहलायेगा। हम चाहते तो हैं। दसवें माला पर रहे, लेकिन एक माला भी नहीं फेरते। इस प्रकार बहुत सुंदर समीचीन शब्दों में जिनवाणी का रसपान कराया ।

(22/11/2018) वरली से खार प्रवेश चर्या

खार में सार बताने पूज्य गुरुवर का प्रवेश हुआ। स्वाध्याय हुआ, जिसमें बतलाया कि सूर्य के प्रकाश में ही चलना चाहिए। जिससे जीवों की रक्षा हो जायेगी। जानवर डरकर भागेंगे नहीं ।

जानवर भी
जिनवर बन सकता है ।
गुरुवर कहते है
वर नहीं
जिनवर बनो ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

रवि प्रकाश हो, प्रासुक पथ हो, शुद्ध भाव धारा।
शुभ निमित्त के लिए गमन हो, प्रभु ने उच्-चारा ॥
चार हाथ भूमि को लखकर पैदल ही चलना ।
धर्म - ध्यान में रत होकर के श्रुत चिंतन करना ॥

(23/11/2018) खार से साकीनाका

साकीनाका प्रवेश हुआ मुनि श्री जयकीर्ति महाराज ने पूज्य गुरुवर के दर्शन प्राप्त किए। 25-11-2018 के दिवस ही आचार्य श्री कल्पवृक्षनंदी, आचार्य श्री निश्चयसागर जी महाराज का गुरुवर से भव्य मिलन हुआ। मुनि श्री जयकीर्ति महाराज द्वारा रामकथा हुई, पिच्छी परिवर्तन, पाद-प्रक्षालन, पूजन प्रवचन आदि शुभ कार्य, शुभ घड़ी में सम्पन्न हुये। श्रीमती रूबी जी को समाज रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। पूज्य गुरुवर ने उपदेश के माध्यम से उन्हें चेलना कहा। आज आपने सभा मंडप तैयार किया कल आपको समवशरण तैयार करने का मौका मिले। यह आशीर्वाद दिया।

प्रवचन सभा मंदिर है
मंच वेदी है
साधु भगवान है।
भगवान बनना है
तो बाहर में भागना छोड़,
अंदर में भीगना प्रारंभ कर दो
भगवान बन जाओगे।
मैं भगवान बन सकता हूँ।
मैं भगवान बनूँगा।
मेरा संकल्प है।
मैं भगवान बन के रहूँगा।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(25/11/2018) साकीनाका चर्या

दोपहर स्वाध्याय में, पूज्य गुरुवर ने कहा - विशेषता बोलने में नहीं, अपितु मौन रहने में है । यदि मौन नहीं रह सकते तो......

हित, मित, प्रिय, यति बात कहे ।
हित, मित, प्रिय, मुनि बात कहे ।
हित, मित, प्रिय, श्रुत बात कहे ।

पूज्य गुरुवर ने बतलाया -

पाप न लगे, गुण मिल जाये,
वहाँ बोलने कि सार्थकता है।

(26/11/2018) साकीनाका से गोरेगाँव प्रवेश

गोरेगाँव में प्रवेश हुआ, मुनि शुभम् सागर जी महाराज से मिलन हुआ आगवानी के पश्चात् पूज्य गुरुवर का उपदेश हुआ ।

(27/11/2018) पूज्य गुरुवर ने प्रवचन के माध्यम से कहा - हमारे जीवन में ईर्ष्या नहीं ईहा होना चाहिए। एक अज्ञ होता है जो प्रश्न नहीं करता। एक सर्वज्ञ होता है, जिसे प्रश्न करने कि इच्छा नहीं होती । और हम न तो अज्ञ है , न सर्वज्ञ है , हम तो अनभिज्ञ है । इसलिए प्रश्न करते है ।

स्मृति की माँ का नाम धारणा है।

अवग्रह = वस्तु का प्रथम ग्रहण
ईहा = इच्छा जाने
आवाय = निर्णय
धारणा = पक्का निर्णय

समवसरण साधना सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- स्मृति का जन्म धारणा की कोख से होता है । इसलिए निर्णय एक बार नहीं सौ बार होना चाहिए ।
- पक्का प्रेम हो, या बैर हो तो, धारणा पक्की होती है ।
- उस धारणा को याद मत करना, जिससे सम्यक् दर्शन न हो।
- जब विशुद्धि आती है, तो सद्-बुद्धि आती है । जब विशुद्धि जाती है, तो कुबुद्धि आती है।
- प्रेम में डूबकर कार्य करोगे तो याद रहेगा। प्रेम में कराया गया भोजन भी आनंद देता है।
- हम किसी को, पैसे न दे पायें, प्रेम तो दे । मीठा न खिला पायें, मीठा पानी तो पिलायें, फल न खिला पायें, लेकिन फूल - सी मुस्कुराहट जरूर दें।

(28/11/2018) **बुधवार - " राम कथा गोरेगाँव में "**

प्रियआत्मन्!

पूज्य गुरुवर ने कहा - पुराण प्राण हो जाना चाहिए।
जिससे लाभ हो, उसे जरूर प्राप्त करना चाहिए॥

पत्थर, प्रतिमा के लिए,
बीज, वृक्ष के लिए
ईंधन, आग के लिए,
दूध, घी के लिए
मेरी आत्मा
परमात्मा बनने के लिए है ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- रहस्य विद्या को गुरु बिना पुस्तक के सिखाते जाते हैं।
- पुत्र वीर है, तो युद्ध में पिता को जाने की आवश्यकता क्या है?
- जो पिता के कुल की रक्षा करे, कुल को पवित्र करे वह पुत्र है। योग्य पुत्र, पिता की आज्ञा के बिना कुछ स्वीकार नहीं करते, और यही योग्यता की पहचान है।
- जिनका ब्रह्मचर्य स्थिर होता है, उन्हें सफलता अवश्य मिलती है।
- आँखों के आँसू पश्चात्ताप के होते हैं, जो पाप को धो देते हैं।
- मुनिराज ने गिद्ध में सिद्ध को देखा।
- होनहार अच्छी हो, तो दो शब्दों के संबोधन से, जीवन बदल जाता है।
- शास्त्रों में लिखा है, व्रति को आहार कराने के बाद आहार करना चाहिए।
- सीता ने पक्षी का पालन ही नहीं किया, अपितु सीता ने जिनधर्म के पक्ष का पालन किया।
- श्रमण, आचार्य, सागर ने केशलोंच किए।

(29/11/2018) गुरुवार गोरेगाँव से विहार

प्रियआत्मन्!

भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम इतिहास कल कुछ और आगे बढ़ा आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज द्वारा अभिनव वृद्धि हुई। पूज्य गुरुवर ने बतलाया, दीक्षायें देखने से परिणाम संयमित होते हैं।

**वैराग्य की लहर उठती है, जीवन की सारता
और संसार की असारता का बोध कराती है।**

पूज्य गुरुवर ने जीवन दो प्रकार का बतलाया-

- माता-पिता के द्वारा, पाप पूर्ण जन्म होता है। दस दिन तक शुद्धि नहीं होती है।

- गुरुवर जन्म देते है, तो संसार पवित्र हो जाता है जिसे हम खुली आँखों से देखते है ।
- दीनता और दीर्घता के क्षय का उपाय दीक्षा है ।

(30/11/2018) **बोरीवली, मुंबई प्रवेश**

गुरु शिक्षा सूत्र

- दुःख का कारण क्या है समझो, क्योंकि बिना कारण के कार्य नहीं होता है ।
- कार्य दुःख है, तो कारण, पाप है, वह ही दुःख है ।
- एक अज्ञान 100 पाप के बराबर होता है, इसलिए अज्ञान को हटाओ ।
- करुणा का स्रोत गुरु से बहता है ।
- पर की पीड़ा अपनी करुणा की परीक्षा लेती है ।
- हमारी लोभ कषाय हमें अंधकार में ले जाती है ।
- मेरे पाप ही मेरे दुःख के कारण हैं ।
- पाप के 3 कारण- संसार, शरीर, भोग
- संसार का मतलब मिथ्यात्व है ।
- एक आकार का संसार है, एक विकार का संसार है। आकार का संसार बाहर, विकार का संसार अंदर है ।
- मजा तो मजने में है। मजा तो अंदर है, नहीं मजा तो बाहर ।
- हमें संसार का क्षय नहीं करना, हमें भीतर के संसार का क्षय करना है।
- बाहर का संसार अकृत्रिम है, लेकिन भीतर का संसार स्वयं ने रचा (कृत्रिम) है।

नमस्कु शामन सुविधा समिति (रजि.) मुंबई

- महावीर स्वामी ने व्यक्ति पर प्रहार नहीं किया, विकृति पर प्रहार किया। क्योंकि विकृति पर प्रहार करने से अहिंसा पलती है। पुण्य होता है ।
- व्यक्ति को नहीं, विकृति को दूर करो ।
- थाली गंदी होती है तो थाली बाहर जाती है, साफ होती है, तो अंदर आ जाती है।
- विकृति में नहीं, प्रकृति में जिओ ।
- तत्वज्ञान की राख हमें माँज देती है ।
- ज्ञान राख है - बर्तन चमकता है, मँजने के बाद; चेतना चमकती है, मँजने के बाद
- शिष्य मंजा हुआ होना चाहिए ।
- शिष्य थाली की तरह होता है, और जिसमें गुरु संयम की खीर परोसते है।
- विकार का क्षय संसार का क्षय है ।
- दुःख में धैर्य की, सुख में वैराग्य की परीक्षा का नाम है - दीक्षा ।
- यदि दुःख में धैर्य नहीं है, और सुख में वैराग्य नहीं है, तो समझना माता-पिता नहीं है ।
- दीक्षा तो समूह में हो जाती है, लेकिन साधना तो एकांत में होती है।
- दीक्षा तालियों की गड़गड़ाहट से होती है, लेकिन पालन गालियों में भी करना पड़ता है।
- चरणानुयोग की दीक्षा, गुरु दे सकते है, 28 मूलगुणों का संस्कार गुरु कर सकते है। करणानुयोग की दीक्षा, गुणस्थान से होती है। भाव दीक्षा स्वयं से होती है ।
- गुणस्थान दर्शक के परिचय में नहीं आता है, चर्या दर्शकों में आती है ।
- 3 काल की सामायिक, अपनी कापी जाँचना है। स्वयं लिखो, परखो एवं परखो।
- पापों से भय, गुणों की चाह साधुओं को होनी चाहिए ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- अकलंक स्वामी पानी में डुबकी लगाये, तो वह बच गये, और बच गये तो सबको उन्होंने जिनवाणी में डुबा दिया तो सब बच गये ।
- चलो, पर पाप न हो - ईर्या समिति। बोलो पर पाप न हो - भाषा समिति ।
- मेले मे, बेटे ने माँ को छोड़ दिया, और साधु ने समिति को छोड़ दिया बराबर है।
- बोलना हमारी असमर्थता की कहानी है ।
- प्रमाद को दूर करने के लिए परिमार्जन किया जाता है।
- मौन रहने से सत्यव्रत का पालन होता है ।

(01/12/2018) **बोरीवली, मुंबई**

प्रियआत्मन्!

दुःख देने से पुण्य होता है, सुख देने से पाप होता है । इसलिए हमारे आचार्य ने कहा - दुख दो। यह एकांत नहीं है, हमारा पुण्य पाप दूसरों पर आधारित नहीं है, हमारे अभिप्राय का है । एक वैद्य का प्रयोजन रोगी को स्वस्थ बनाने का है, उसे कष्ट हो तो हो यदि दुःख देने से पाप होता है, तो सबसे ज्यादा पाप आचार्य भगवन को लगना चाहिए। पाप-पुण्य अभिप्राय से होता है। "विपाके परिणामं हितं" अंत में हित होना चाहिए।

- विचार करें मेरा कर्म दूसरे के अधीन नहीं है ।
- अभिप्राय में जब खोट होती है, तो पाप का बंध होता है ।
- संसार में दो चीजें होती हैं (1) विशुद्धि (2) संक्लेश
- मोह सहित ज्ञान गंदे पानी के समान है। मोह रहित ज्ञान निर्मल पानी के समान है ।
- थोड़ा-सा भी ज्ञान हो, लेकिन कषाय से हीन हो, शुद्ध हो ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(02/12/2018)

दोहा -

थोड़ी चर्या बहुत फल, कैसे पाऊँ नाथ ।
ज्ञान चरित से शुद्ध हो, तप संयम के साथ।।

- धर्म सिर्फ वक्ता से नहीं चलेगा, तीनों से चलेगा " वक्ता, श्रोता और आचरण कर्ता"
- अन्य मत- जुगनू की तरह चमकते रहे, और जैनमत सूर्य की तरह दमकता रहा, क्योंकि वक्ता तीर्थंकर थे ।
- धर्म के तीन रूप हैं । " वक्ता, श्रोता और आचरण कर्ता "
- हमारे यहाँ वक्ता केवलज्ञानी है। श्रोता - चतुर्थ गुणस्थानवर्ती, श्रावक आचरण कर्ता, 6वें गुणस्थानवर्ती मुनि । जिस दिन जिनवाणी का नाम सुनते ही चेहरे पर मुस्कान आ जायेगी, उस दिन जिनवाणी याद हो जायेगी। ।
- गलत सलाह देना, गलत रास्ते पर चलना है ।
- रत्नत्रय के तेज से प्रभावित करो, पर से प्रभावित मत होना ।
- जिसके पास विशुद्धि वह ज्ञानी, जिसके पास संक्लेश वह अज्ञानी।
- गलत बात कहना, और गलत बात सहना (मिथ्या तत्त्व) स्व पर के बैरी है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(03/12/2018)

- आत्मा के भीतर होने वाली क्रिया को अध्यात्म कहते हैं ।
- अंतरंग में होने वाली परिणाम दशा अध्यात्म है ।
- आत्म शांति का अभ्युदय आत्मा में ही होता है ।
- सुख का जन्म पुद्गल से नहीं होता है ।
- शास्त्र आग की तरह है, शास्त्र को पढ़ते समय सावधानी रखोगे तो शुद्ध हो जाओगे , नहीं रखोगे तो कागज की तरह जल जाओगे ।
- समयसार शांत रस का विषय है ।
- उपयोग देखो, उदय नहीं ।
- समिति के साथ रहना, माँ के साथ रहना है ।

(04/12/2018)

- सम्+अय= समय, सम्यग्ज्ञान को समय कहते हैं ।
- ज्ञान का फल है, अपने सिद्ध स्वरूप की प्राप्ति ।
- समयसार जीव को सिद्धालय में बिठाने के लिए है ।
- मोह का विनाश ही, अनंत सुख की प्राप्ति का उपाय है ।
- जितनी विशुद्धि से सुनोगे, उतनी बुद्धि आयेगी ।

- आप मोह का नाश जितना कर पायेंगे? उतना आप विकास कर पायेंगे ।
- द्रव्यश्रुत से भावश्रुत कि यात्रा विशुद्धि के बल पर होती है ।
- निज आत्मा, निज अनुभव से प्रकाशित होता है ।
- श्रावक धन को लगाता है, तो मकान बनता है । साधु ध्यान में लगाता है, तो महान बनता है ।
- पाप कार्य में चित्त का न जाना ही, चित्त की एकाग्रता है ।
- मेरा भविष्य समयसार है ।
- अभी क्या हो? परात्मा, होना क्या है? निज आत्मा। होंगे क्या? परमात्मा।
- मुझे किसी का कुछ न मिले, अपने अंदर बैठा परमात्मा मुझे मिले।
- आचार-विचार जिसका सुंदर है, वही सुंदर है ।
- जो सुना, अब नहीं सुनना, जिसे देखा, उसे नहीं देखना। जिसे पहचाना, उसे नहीं पहचानना । जिसका अनुभव किया, । उसका अनुभव नहीं करना । यही साधना का रहस्य है ।
- नाली का पानी सुलभ है, लेकिन उपयोगी नहीं है ।
- दूध की नदियाँ नहीं बहती, लेकिन उपयोगी है ।
- आस्रव को रोकना था, बंध कर लिया ।
- संवर करने आये थे, संबंध कर लिया ।
- पूज्य गुरुवर ने सभा को संबोधित करते हुए कहा - सोना कम होता है, तो सोना ही मिलाया जाता है, चाँदी तोलते समय कम हो, तो चाँदी ही मिलाई जाती है । ऐसे ही मैं समयसार रूपी सोना तोल रहा हूँ, तो सोना ही मिलाना पड़ता है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

इसके बीच में, मैं किस्से कहानी नहीं सुनाऊँगा क्योंकि यह लोहा और ताँबे का काम करेगा। लेकिन सोने में सोना मिलना चाहिए।

- असंयम से बचो, संयम मे रचो।
- पारसमणि पारसमणि ही रहती है, लेकिन उसे छूकर लोहा सोना बन जाता है।
- शिष्य गुरु के पास आता है,गुरु-गुरु ही रहते है, शिष्य भगवान बन जाता है।
- निर्विकल्प होने का उपाय है, ज्ञायक रहो।
- शब्द ब्रह्म, परमब्रह्म को जगाता है।
- अगर तुम न्याय शास्त्र पढ़ोगे, तो तुम अन्याय से बच सकते हो।
- शुद्धात्मा की विधि शास्त्र में है, अनुभव आत्मा में है।
- अनुभव के बिना ज्ञान अपरिपक्व होता है। दर्द के क्षणों में, कोई अपना मीत होता है। जिसे हर समय गुनगुनाया जाता है। वह संगीत होता है।
- मुनिराज अनुभव की माता है।
- प्रसूती में दर्द होता है, अनुभूति में आनंद होता है।
- तत्वज्ञान का आलोक, शक्ति का परिचय कराता है।
- अनंत नयों के समूह को प्रमाण कहते है।
- समयसार में नयों की परिभाषा नहीं, प्रयोग है, नय विवक्षा का कथन करने से ये न्याय शास्त्र भी है, द्रव्य का कथन करने से ये द्रव्यार्थिक भी है।

(05/12/2018)

- गुस्सा आना मेरा विभाव परिणाम है।
- शब्द में आत्मा नहीं, आत्मा में शब्द नहीं है, शास्त्र में ज्ञान नहीं है, ज्ञान आत्मा में है । इसलिए शब्द को नहीं समझना है, समझना आत्मा को है।
- जहाँ-जहाँ स्याद्वाद है, वहाँ-वहाँ जिनवाणी है,
- जहाँ-जहाँ जिनवाणी है, वहाँ-वहाँ स्याद्वाद है।
- भविष्य को वर्तमान में निहारने का नाम है, निश्चय नय ।
- मुनि की सभा मौन की सभा होती है ।
- यदि जीवन भर की कमी दूर करना है, तो आज कि कमी दूर कर लीजिए । संघ (समूह) में गलती का ये तो निराकरण होता है, या अनुकरण होता है ।
- न्याय शास्त्र - नमक का पैकिट है । प्रथमानुयोग, द्रव्यानुयोग, करणानुयोग, अध्यात्म, सिद्धांत, सभी में न्याय है । सभी में थोड़ा-थोड़ा नमक है ।

06/12/2018)

- बिना नमक की रोटी तो खाई जा सकती है, लेकिन बिना, नय (न्याय) के जिनवाणी नहीं चल सकती है।
- नमक से द्वेष रखेगा तो, रोटी का सही स्वाद नहीं ले पायेगा, और स्याद्वाद से द्वेष रखेगा तो जिनवाणी का सही स्वाद (आनन्द) नहीं ले पायेगा ।
- सैनिक को हमेशा शस्त्र लेकर चलना चाहिए, साधु को हमेशा शास्त्र लेकर चलना चाहिए ।

(07/12/2018)

- आत्मा के बाहर न तुम कुछ हो, न तुम्हारा कुछ है ।
- समवशरण सा दुर्लभ वैभव भी भगवान का नहीं, कर्म का है । और कर्म मिटा तो समवशरण मिट गया ।
- समवशरण तो पुण्य का प्रदर्शन है।
- पाप का प्रदर्शन देखना है, तो नरक में देख लो ।
  पुण्य का प्रदर्शन देखना है, तो समवशरण में देख लो।
- तीर्थंकर भगवान का सुख स्वाश्रित है, आपका सुख धनाश्रित है । (पराश्रित है)
- न्याय के बिना कोई ग्रंथ नहीं होता है । स्याद्वाद के बिना कोई ग्रंथ नहीं होता है। जहाँ स्याद्वाद है, वहाँ जिनवाणी है, क्योंकि स्याद्वाद के बिना न्याय नहीं, न्याय के बिना कल्याण नहीं।
- श्रुत का नीर विनय के झरने से झरता है।
- कर्म मैं नहीं हूँ, मेरा कर्म नहीं है, कर्म से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है, और जहाँ तक सम्बन्ध है, वहाँ तक शुद्धता नहीं है ।
- महान ज्ञान तप से ही आता है ।
- गुरु विनय तप के अंतर्गत आती है।
- विद्या के लिए उपवास करो, या न करो, लेकिन विनय जरूर करो ।
- खेती पानी को चाहती है, विद्या विनय को चाहती है।
- जब तक पानी, तब तक खेती । जब तक विनय, तब तक विद्या ।
- स्वाध्याय तप बाद में होता है, पहले विनय तप होता है ।

नमस्तु श्रमण सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- स्वप्न में भी गुरु की अविनय न करने वाले अर्थात विनय करने वाले शिष्य की समाधि होती है।
- धैर्य रखो, संकट के बादल, छट जायेंगे।

08/12/2018)

- आत्मा की शुद्धता समयसार है।
- शास्त्र का समयसार साधन समयसार है, आत्मा का समयसार साध्य समयसार है।
- सुनो प्रथमानुयोग, चलो चरणानुयोग, समझो करणानुयोग, रमो द्रव्यानुयोग।
- पर की पीड़ा अपनी करुणा कि परीक्षा लेती है।
- विद्वान की रक्षा श्रुत की रक्षा है।
- दृश्य एक होता है, दृष्टा अनेक होते हैं, दृष्टा के दृष्टि कोण भिन्न- भिन्न होते हैं।
- नय तत्त्वज्ञान का साधन है।
- दुख का स्रोत ही पाप है।
- 'मया किं करणीयं' मेरे करने योग्य क्या है? करने योग्य मात्र संवर और निर्जरा है।
- मैंने आज तक संवर और निर्जरा नहीं किया, इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि भव्य जीव को ही संवर होता है। भव्य (होने योग्य) भू धातु से भव्य बनता है। जो होने योग्य है, वह भव्य है। भव्य कह दिया तो मानो भगवान कह दिया।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(09/12/2018)

- जो निर्वाण प्राप्त करेगा, वह भव्य है ।
- जगत दो प्रकार का कहा है दृश्य जगत, अदृश्य जगत । जितना दृश्य है, उतना अदृश्य है।
- जिसे संपूर्ण जगत दिखाई देता है, वह है सर्वज्ञ।
- यहाँ बैठे-बैठे जो तीनों लोको का दर्शन करा दे , उसका नाम जिनवाणी है।

(10/12/18)

- जिसके हाथ में आगम आ गया, उसके जीवन में आँख आ गई ।
- जिनवाणी की राजधानी में, स्याद्वाद का राजा राज्य करता है ।
- वक्ता का आश्रय लेकर, शब्द अर्थ को बदल देता है । शब्द के अर्थ साहित्य में नहीं। वक्ता के अभिप्राय में होता है ।
- आगम में प्रवेश करने वाले सम्यग्दृष्टि जीव वही हो सकते है, जिन्होंने स्वाध्याय किया है।
- अपनी शक्ति को नहीं छुपाकर उपकार करना वैय्यावृत्ति है ।

- खोटे परिणामों से आत्मा गंदा होती है।
- विभाव का नाम गंदगी है, स्वभाव का नाम स्वच्छता है।
- गंदगी हमें गंदे स्थान पर ले जाती है।
- शास्त्र के समुद्र में डूबोगे तो, जिनागम के रत्न मिलेंगे।
- भोजन के व्यंजन शरीर को पुष्ट बनाते हैं।
- आत्मा के प्रवचन आत्मा को पुष्ट बनाते हैं।
- आगम के आख्यान, आत्मा को पुष्ट बनाते हैं।
- आत्मा को भोजन कराना हो तो, जिनवाणी के भीतर जाओ।
- सोने के स्थान पर अगर बेनटेक्स खरीदोंगे तो धोओ और रोओ।
- नाव में पानी आ जायेगा, तो नाव डूब जायेगी। आत्मा में अगर ज्यादा आस्रव बंध आ जायेगा, तो आत्मा नरक में डूब जायेगी।
- हमें पंथ को नहीं महावीर की देशना को पढ़ना है।
- कदाचित गुरु में कमी भी हो, लेकिन हमारी गुरु भक्ति में कमी नहीं होना चाहिए।
- गुरु डाटेंगे, हम सुधरेंगे, इसलिए हमने गुरु बनाया है।
- जहाँ निर्दोषता वहाँ पूज्यता, जैसा उपदेश वैसी श्रद्धा।
- उपदेश ही मार्ग है, जो उपदेश नहीं, वह उन्मार्ग है।
- पूड़ी कड़ाई में फूलती है, हम प्रशंसा में फूलते हैं।
- जैसी विनय, वैसी उन्नति।
- शिशु सुप्त रागी है, मुनि वीतरागी है।
- बाल (अज्ञानी) ही बाल को रखता है।

नमस्कार श्रमण स्वाध्याय सागर (रजि.) मुंबई

(16/12/2018) बोरीवली से विहार मीरारोड मुम्बई

(17/12/2018) मीरारोड से भयंदर मुम्बई विहार

पू. गुरुवर के सानिध्य में आ. श्री बैराग्यनंदी महाराज के संघस्थ ब्र. भैया की गोद भराई हुई ! गुरुवर ने आर्शीवाद में कहा " गोद भराई वैराग्य की परीक्षा है । "

(18/12/2018) चर्या

(19/12/2018) मीरारोड से पोदनपुर मुम्बई

(20/12/2018) पोदनपुर से भान्डुप मुम्बई प्रवेश

(22/12/2018)- पोदनपुर से भान्डुप मुम्बई प्रवेश - चर्या

(22/12/2018) भाण्डुप विश्राम

- श्रुत भक्ति, श्रुत की पूजा है, आचार्य भक्ति आचार्य की पूजा है ।
- समयसार की समस्याओं का समाधान - न्याय ग्रंथों से होता है ।
- जैन विद्या, विनय से आती है।
- णाणं सिक्खदि, ज्ञानं शिक्षते, ज्ञान शिक्षित करता है- विद्योपादानं करोति विद्या को ग्रहण कराता है ।
- ज्ञान के आने पर व्यक्ति गुणी बन जाता है ।
- ज्ञान चंचल नहीं स्थिर बनाता है ।
- न्याय करने के लिए ज्ञान आवश्यक है ।
- असमाधि के कारण से बचना ही, समाधि है ।
- कार्य का प्रारंभ नहीं करोगे - तो फल की प्राप्ति नहीं होगी ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(23/12/2018) रविवार भाण्डुप से ठाणा प्रवेश चर्या

- भिवंडी में आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के समाधि दिवस पर पूज्य गुरुवर ने कहा - आचार्य सन्मति सागर जी महाराज मेरे पथ के प्रदर्शक - मेरे श्रद्धा के देवता है । जिन्हें प्रणाम करो, तो रोग नाश हो जाते है। स्वरूप को निहारें तो सुंदर स्वरूप की प्राप्ति होती है ।
- ऊँचा बैठने से कोई ऊँचा नहीं होता है, भाव ऊँचे रखो, भले ही ऊँचा बैठो या नीचा बैठो ।
- तपस्वियों का अनादर बड़ा दुःख देता है ।
- जो अपराध हो जाये, उसे दुबारा नहीं करना, सबसे बड़ा प्रायश्चित है

(24/12/2018) सोमवार भिवंडी प्रवेश चर्या विहार

(25/12/2018) मंगलवार पड़घा चर्या विहार कलश मंदिर

- पुस्तक का पढ़ा भूल भी सकते है, लेकिन आँखों से देखा हुआ नहीं भूल सकते है।
- पाप का पहला द्वार, आँख से होता है।
- चारित्र की रक्षा के लिए, आँखों से कम देखो।
- शुभ ही सोचना, शुभ ही बोलना, शुभ ही करना ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- जो कार्य कर्म क्षय में निमित्त हो वह उचित है ।
- जो कर्म क्षय में निमित्त नहीं वह कार्य अनुचित है ।

(26/12/2018) बुधवार वाशिंद प्रवेश

(27/12/2018) गुरुवार धामणी विश्राम खर्डी फाटा विश्राम

(28/12/2018) शुक्रवार ईगतपुरी प्रवेश चर्या

(29/12/2018) शनिवार घोटी प्रवेश चर्या गोंदे विश्राम

(30/12/2018) रविवार अंबड़ प्रवेश चर्या म्हसरूल विश्राम

विहार संस्मरण

पूज्य गुरुवर, चिंतन के धनी,, चिंताओं का हनन करने वाले गुरुवर ने चिंतन किया ।

सामने एक गाय घास चर रही थी, बगल में कुछ बगुले, कीड़े खा रहे थे। पूज्य गुरुवर ने कहा शाकाहारी जानवर को पेट भरने के लिए इतनी सारी घास है, और मांसाहारी के लिए कम है, लेकिन तृप्ति नहीं, हाथी का पेट इतना बड़ा होता है, फिर भी भर लेता है, क्योंकि शाकाहारी को भोजन के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती है, आसानी से पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है। शेर का पेट छोटा होता

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

है - शेर मांसाहारी होता है, उसे शिकार करने कि आवश्यकता पड़ती है, और अपना पेट नहीं भर पाता है । इसलिए जीवों को शाकाहारी बनना चाहिए ।

पूज्य गुरुवर ने चलते समय विहार में अपने चिंतन के सुमन बिखेरते हुये कहा - कश्मीर की केशर हम राजस्थान में नहीं उगा सकते, लेकिन ला सकते है। क्योंकि जो जहाँ होता है, वही होता है। शेर जंगल में ही रहता है, ऐसे ही संयम तप, त्याग, मात्र भारत देश में ही पाया जाता है, अन्यत्र नहीं पाया जाता है।

(31/12/2018) सोमवार सिद्ध क्षेत्र गजपंथा प्रवेश चर्या

- सृजन में शक्ति लगती है, क्योंकि चिंतन कि ऊर्जा ही आपकी शक्ति है ।
- एक-एक समय मूल्यवान है, हम सजग और सावधान रहते है, तो हम मोक्ष मार्ग की सामग्री बनते हैं ।
- प्रमाद रहित जीव को, प्रति पल नया वर्ष है ।
- संघ ही संरक्षक कवच है, रक्षा करता है ।
- समूह में व्यक्ति सजग और सावधान रहता है ।
- कीर्ति और मैत्री बनाने के लिए सजग रहे ।
- अपने चिंतन को ऊर्ध्वगामी बनाये ।

(01/01/19) मंगलवार श्री गजपंथा सिद्ध क्षेत्र

- गुरुवर रत्नत्रय दाता है ।
- गुरु के उपकारों को सौ जन्म का समर्पण भी नहीं चुका सकता हैं।
- कानों में वह शक्ति देना, कि आत्म निंदा को सुन सकूँ, पर प्रशंसा को कह सकूँ।

(02/01/19) बुधवार गजपंथा से विहार

- कार्य पुण्य से होता है ।
- गुरुवर ने कहाँ आप विशुद्धि बढ़ाओ हम बुद्धि बढ़ायेंगे ।
- क्या हमारे इस कार्य से समाधि हो सकती है ? इस प्रकार का विचार करें ?

(03/01/19) गुरुवार आडगाँव प्रवेश

- संयम साथ तो, पुण्य साथ, पुण्य साथ तो, सब साथ।
- जहाँ बैठो उस जगह कि शांति का अनुभव करो ।
- जब तक हम बाहर का सुनना बंद नहीं करेंगे, तब तक भीतर वाले को नहीं सुन पायेंगे।
- मेरे अंदर ही भगवान, मेरे अंदर ही शैतान है।
- मेरे अंदर ही रावण है, मेरे अंदर ही राम है।

(04/01/19) शुक्रवार पिंपलगाँव चर्या

- समस्याओं में कर्मसिद्धान्त पर विश्वास रखना चाहिए।

नमस्तु श्रमण संस्कृति (रजि.) मुंबई

(05/01/19) शनिवार णमोकार तीर्थ चर्या

आचार्य श्री ने कहा - आचार्य देवनन्दी महाराज ने यह णमोकार तीर्थ नहीं जिन तीर्थ और जिनशासन की स्थापना की है । जब तक यह प्रतिमाऐं रहेंगी तब तक जिन शासन जीवंत रहेगा इसीलिए यह कार्य जिनशासन का महान कार्य हैं।

(06/01/19) रविवार चांदवड चर्या

यह एक पवित्र आतिशमय प्राचीन क्षेत्र है । यह पहाड़ को काटकर करीब 300 सीड़ी ऊपर बीचों बीच गुफा बनाकर पहाड़ मे ही भगवान की प्रतिमाऐं बनाई गई है। इस गुफा में 10 चौबीसी साहित 200 प्रतिमाऐं विराजित है ।

यह भूमि पुनीत है सो पूज्य गुरुवर ने यहाँ ध्यान किया और समाधि भक्ति की रचना हुई ।

(07/01/19) सोमवार वारवरी चर्या

(08/01/19) मंगलवार सठाणा चर्या

(09/01/19) बुधवार तहराबाद चर्या

(10/01/19) गुरूवार ऋषभदेवपुरम् चर्या

यह तीर्थ क्षेत्र है। यहाँ पर पूज्य आचार्य भगवान के दर्शनार्थ पीठाधीश रविन्द्रकीर्ति जी पधारे । आचार्य श्री ने उनसे चर्चा की और आर्शीवाद दिया और माता जी (गणिनी प्रमुख ज्ञानमति माता जी) की

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

बुन्देलखण्ड यात्रा की प्रसंशा की और स्वामी जी को मोक्षमार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा एवं आशीर्वाद दिया।

(10/01/19) गुरुवार मांगीतुंगी सिद्ध क्षेत्र प्रवेश चर्या

यह पुनीत क्षेत्र इतिहास के राम हनुमान सुग्रीव, गवय, गवाख्य, नील, महानील आदि 99 करोड़ मुनि सिद्ध हुए है। और 108 फुट उतंग भगवान आदिनाथ की प्रतिमा दूर से ही आँखों को शान्ति देने के लिए दिखाई देती है। पूज्य गुरुवर इस पुनीत क्षेत्र पर प्रथम बार पधार रहे है। सो उनका रोम-रोम प्रभु भक्ति और आत्मिक ज्ञान के बल पर रोमांचित हो रहे है। आचार्य श्री की प्रसन्नता देखते ही बन रही है। वह तो और जिन सिद्धों को अनंत नमस्कार करते चल रहें है। गणाचार्य. कुन्थुसागर जी से दीक्षिता आर्यिका पावनश्री ने आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। चारित्रश्री माता जी का साथ में प्रवास रहा। श्री पार्श्वनाथ भगवान का बृहद पंचामृत अभिषेक आचार्य श्री के सानिध्य में हुआ। श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान हुआ और पर्वतराज की वंदना की गई।

(16/01/19) मंगलवार ऋषभदेवपुरम् चर्या

(17/01/19) बुधवार समोडे हाईस्कूल चर्या

(18/01/19) गुरुवार विसरवाडी चर्या

- यथार्थ जानो, हितार्थ कहो।
- संघ में सम्मान चाहते हो, तो मौन रहना सीख जाओ।
- अधिक निद्रालु होना, नील लेश्या होने के लक्षण है। और नील लेश्या वालों कि समाधि नहीं होती है। पीत् पद्म, लेश्या वालों की ही समाधि होती है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- कषाय सल्लेखना के बिना, सम्यग्दर्शन प्रकट नहीं होता, महाव्रत प्रकट नहीं होता ।
- कम सोना, कम खाना, मौन रहना, ये समाधि के तीन कारण है ।
- संक्लेशता आर्त रौद्र ध्यान की निशानी है ।
- समस्या कोई भी हो, पर समाधान धर्म ध्यान में ही है ।
- कर्म का उदय ही निर्जरा का काल है, यदि समता रखी जाये तो ।
- अपने परिणाम ही महान फल देते हैं ।
- पुण्यात्मा के घर में संसार की समस्त श्रेष्ठ वस्तुऐ आ जाती हैं।
- स्वाध्याय हर परिस्थिति को बदल देता है ।
- पूज्य गुरुवर ने, रास्ते में चिंतन बतलाया खेतों को देखकर के, पूज्य गुरुवर ने कहा मिट्टी वही है, पानी वही है, मिट्टी ही गन्ना बन जाती है, मिट्टी ही नीम में परिणमन कर जाती है। मिट्टी ही नींबू बन जाती है।
- प्रभावित होओगे तो, प्रभावित नहीं कर पाओगे ।
- पाप का प्रकाशक भी पापी है ।
- विनम्रता ही विद्वत्ता का अलंकार है ।
- ठोस स्वाध्याय सोना बेचने की तरह है, बिना स्वाध्याय के प्रवचन करना पान बेचने की तरह है ।
- शास्त्र का व्याख्यान ही वाचना है ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(20/01/19) रविवार महमुन्ना चर्या

(21/01/19) सोमवार प्यारा चर्या

- आदेश शत्रुवत होता है, आगम मित्रवत होता है ।
- स्वरूप में रहना ही, जागना है, स्वरूप में न रहना ही सोना है ।

(22/01/19) मंगलवार बीजापुर चर्या

(23/01/19) बुधवार महुवाजी चर्या

(24/01/19) गुरुवार महुवा जी प्रवास

सायंकाल, मुंबई से अशोक जी, रमेश जी एवं और लोग पधारे, पूज्य गुरुवर ने अशोक जी से कहा बहुत अच्छा विहार चल रहा है, अशोक जी ने कहा हम तो अपना कर्ज उतार रहे है, लेकिन पूज्य गुरुवर ने कहा, आप, कर्ज नहीं, अपना कर्तव्य कर रहे हो यह सुनकर हम सब प्रसन्न हुए।

(25/01/19) महुवा जी से प्रवास

दोपहर में महुवा जी से विहार हुआ, रास्ते में सूरत से पधारे एक श्रावक रत्न को पैर में कांटा लगा, वह चलते जा रहे थे, लेकिन पूज्य गुरुवर सरलता के धनी है ही गुरुवर स्वयं जमीन पर बैठ गये और कांटा निकालने में मदद करने लगे धन्य है गुरुवर की सरलता, जय हो गुरुवर । रास्ते में रायचंद्र जी म्यूजियम मिला, पूज्य गुरुवर वहाँ जाकर आनन्दित थे । संसारी जीव संसार को चाहता है, और वैरागी जीव शास्त्र को, पूज्य गुरुवर ने अनेक शास्त्र देखे । अनेक कलाकृति एवं लेख देखे ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

संस्मरण

(26/01/19) शनिवार पर्वत पटिया सूरत प्रवेश चर्या

आरती के समय आचार्य भगवन् ने कहा हम दीपावली के दीप हैं, इस दीप से यह सब दीप जलते हैं। विहार में मैंने कहा आचार्य भगवान से - आपकी माला मिल गई क्या ? तो आचार्य भगवन् ने कहा - हमारी माला कोई और माला नहीं है, कि गुम जाये। हमारी माला तीर्थंकर जप की माला है, इसलिए नहीं गुमेगी। सांयकाल बहुत शिक्षायें प्राप्त हुई। प्रेम-पूर्ण अनुशासन के धनी पूज्य, गुरुवर ने मीठी-मीठी डाँट से, सन्मार्ग दिखाया। जंगल में अकेले न जायें इत्यादि। गुरुवर ने कहा - जो आज बुरा लग रहा है, वह कल अच्छा लगेगा और जो आज अच्छा लग रहा है वह कल बुरा भी लग सकता है।

(27/01/19) रविवार सूरत प्रवेश

- सूरत में खूबसूरत भव्य अगवानी हुई। पाद-प्रक्षालन 21 थालियों में सुंदर तरीके से हुआ। प्रवचन हुए। पूज्य गुरुवर ने न्याय आगम से संबोधन किया।
- तत्वार्थ सूत्र के रचयिता उमास्वामी जी है, अगर वह आपके सामने आ जाए तो कैसा लगेगा ? अच्छा लगेगा। आचार्य पूज्यपाद स्वामी सामने आ जाए तो ? समंतभद्र स्वामी सामने आ जाए तो ? मानतुंग आचार्य

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

आपके सामने आ जाए तो ? कैसा लगेगा ? बहुत अच्छा लगेगा। आज आपका सातिशय पुण्य का उदय है कि समाधि भक्ति के रचयिता आपके सामने हैं । इस प्रकार पूज्य गुरुवर ने ज्ञान का झरना बहाया । आचार्य भगवन् ने दर्शन कर लिए थे। हमने कहा - भगवन् यहाँ भगवान है। आचार्य भगवन् ने कहा - हमने दर्शन कर लिए । फिर हमने आचार्य भगवन् से क्षमा मांगी । तो आचार्य भगवन् ने कहा - कोई बात नहीं , अच्छी बात को बार-बार कहना चाहिए।

- आचार्य.... सागर जी के केशलोंच करते हुए पूज्य गुरुवर ने कहा - जो सर पर चढ़ता है वह बालों के समान उखाड़ दिया जाता है और जो चरणों में रहता है वह हमेशा रहता है । इसलिए तो चरणों में बाल नहीं होते ।
- आचार्य भगवन् ने जिन भगवान् के दर्शन करते हुए कहा - चरण एक साथ है तो अच्छे लगते हैं । और हम एक साथ है , तो अच्छे लगते हैं ।

(28.01/19) **सोमवार सूरत**

आचार्य भगवन् का 25 वाँ क्षुल्लक दीक्षा दिवस

- चेतन और अचेतन के संयोग का नाम संसार है ।
- चेतन -अचेतन के वियोग को मोक्ष कहते हैं ।
- वैराग्य ही जीवन का सौभाग्य है।
- विद्या उसी की हो जाती है जो विनय पूर्वक अभ्यास करता है ।
- अपने मन को पवित्र रखोगे तो गुरु प्रसन्न होंगे और गुरु प्रसन्न होंगे तो विद्या मंत्रियों की सिद्धि होगी।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(29/01/19) मंगलवार सूरत, पर्वत पाटिया से विहार

- आज पूज्य गुरुवर ने आहार करने के पहले चार स्थानों पर जिन शासन की प्रभावना के लिए प्रवचन हुए। पारले पॉइंट में पूज्य गुरुवर का पड़गाहन का सौभाग्य कमल जी (शैलम) परिवार को प्राप्त हुआ।
- पूज्य गुरुवर ने कहा रचना विशुद्धि में होती है, संक्लेशता में नहीं। क्योंकि संक्लेशता में कभी लिखा नहीं जाता, विशुद्धि में ही लिखा जाता है। जब भी माला बनती है तो खिले फूलों की ही बनती है, मुरझाए की नहीं।

(30.1.19) बुधवार प्रवास

"सम्यक् ज्ञानमेव विभव:"

- आहुरा (सूरत) में आहारचर्या संपन्न हुई। विहार करके कतार गाँव आए जहाँ भक्तों की कतार लगी रहती है। यहाँ मान भंग करने के लिए बहुत सुंदर मान-स्तंभ के दर्शन हुए।
- अजीत नाथ से पारसनाथ तक के शिष्य रेल की पटरी के समान थे। महावीर के शिष्य बस के रोड के समान है।
- विचार और आचरण की ऊंचाई पायें।
- प्रवचन तीर्थंकर के वचन है।
- "विनय फलं सर्व कल्याणं" विनय का फल सर्व कल्याण है।
- विनय ही आचार्य की आराधना है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- वैय्यावृत्ति सर्व शक्ति से करना चाहिए। तप और त्याग यथा शक्ति से करना चाहिए।
- चिंतन शक्ति से ही ज्ञान शक्ति प्रकट होती है।
- आपत्ति से बचाना ही वैय्यावृत्ति है।

(01/02/19) शुक्रवार भाडोल अलवागाँव स्कूल में विश्राम

(02/02/19) शनिवार सजोद प्रवेश चर्या संपन्न हुई ।

- सजोद पहुंचे जहाँ का शीतल वातावरण और शीतलनाथ भगवान के पावन क्षेत्र के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ ।

(03/02/19) रविवार सांयकाल अंकलेश्वर प्रवेश हुआ

- अंकलेश्वर में पूज्य गुरुवर ने अभिषेक -शांति धारा करवाई। भगवान श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक पर आदिबाबा के दर्शन का सौभाग्य आचार्य भगवन् को अंकलेश्वर में हुआ । पूज्य गुरुदेव ने पूजन एवं निर्वाण लाड्डू चढ़वाया ।

- जितनी विनय करोगे, उतनी जल्दी याद होगा।
- विशुद्धि बनाए रखो, पुण्य बढ़ता रहेगा।
- यदि कर्म का उदय समस्या ला सकता है तो समता से कर्म निकाला भी जा सकता है।
- कषाय का काल दुर्घटना का काल है, इससे हमें बचना चाहिए।
- जब तक उपादान पर दृष्टि नहीं डालेंगे तब तक निमित्त को दोष देते रहेंगे।
- जिसका आचरण शुद्ध है, उसकी आम्नाय शुद्ध है।
- जो जीव दुखी है, वह तत्वज्ञान का उपयोग नहीं कर रहा है।
- जो कठिन है वही आपको महान बनाएगा।
- हम अपने अंदर से नकारात्मक ऊर्जा को निकाले, सकारात्मक ऊर्जा को जगाएं।
- बिना विवेक के बोलना कलह करना है।
- पुण्य क्षीण हो जाता है तो दोस्त भी दुश्मन हो जाता है।
- सीता का यदि पाप का उदय नहीं होता तो धोबी खोटा नहीं सोचता।
- राजेश्वरी सो नरकेश्वरी, तपेश्वरी सो स्वर्गेश्वरी।
- पूज्य गुरुवर की आहार चर्या सम्पन्न हुई।
- रास्ते में पूज्य गुरुवर ने कहा - प्रत्येक घटना, एक शिक्षा देकर जाती है।
- रात्रि विश्राम विहारी में हुआ। जिन्होंने हार का त्याग किया वह विहार करता है।

पूज्य गुरुवर ने प्रवचन के माध्यम से बतलाया कि सर्वप्रथम जिनवाणी लिपिबद्ध यहाँ अंकलेश्वर में पुष्पदंत और भूतबलि मुनिराज ने की। पूज्य गुरुवर ने कहा पहले रथ

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

यात्रा में, मात्र श्री जी होते थे। लेकिन आचार्य पुष्पदंत और भूतबलि की कृपा से, हमारे बीच में आज जिनवाणी माँ हमारे पास है । इसलिए आज रथ यात्रा में श्री जी भी होते है माँ जिनवाणी एवं मुनिराज भी होते है ।

यही वह पावन भूमि है, जहाँ धवला जी में णमोकार मंत्र लिपिबद्ध हुआ । इस पावन भूमि में, चतुर्दशी का प्रतिक्रमण किया- पूज्य गुरुवर का चिंतन तो अद्भुत है ही गुरुवर ने कहा यंत्र-शाला, मंत्र-शाला, तंत्र-शाला भी यहाँ होना चाहिए। सायंकाल भरूच प्रवेश हुआ ।

(04/02/19) सोमवार को भरूच

आज भरूच में प्रवचन हुआ एवं आहार चर्या कोतमा निवासी, एक श्रावक रत्न को पूज्य गुरुवर का आहार कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(04/02/2019) सोमवार हिंगलोट चर्या

- दोपहर में विहार, करके सायंकाल हिंगलोट पहुँचे वहाँ अति मात्रा में मच्छर थे।
- पूज्य गुरुवर ने कहाँ कर्म निर्जरा का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है, समता से सहन करना है ।

(05/02/19) मंगलवार भैसली शाम को जोलवा

नमोस्तु श्रमण सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(06/02/2019) बुधवार जोलवा, शाम को दहेज

(07/02/19) गुरुवार दहेज मीठी तलाई

(08/02/19) शुक्रवार घोघा,

- घोघा में इकवारी सिद्धचक्र विधान किया।
- नमक निर्माण देखा।

(09/02/19) शनिवार भावनगर शाम को नवागाँव

(10/02/2019) रविवार सिहोर, शाम को कलिया

(11/02/2019) सोमवार चामुण्डा धाम, शाम को पालीताणा

ज्ञानी पुरुषों के भीतर ज्ञान का नीर बहता रहता है। इसलिए चिंतन गहराई से होना चाहिए। क्योंकि जमीन के भीतर पानी निर्मल पवित्रतम् ही रहता है, बाहर के पानी में कचरा भी जा सकता है। पूज्य गुरुवर का आचार्य आदर्शसागर जी से मिलन हुआ। श्रमण मुनि सतारसागर जी से मिलन हुआ। श्रमण विभास्वर सागर ने पर्वत की वंदना के बाद केशलौंच किया।

(12/02/19) मंगलवार पालीताणा विश्राम

पालीताणा आहार चर्या हुई 13 तारीख को वंदना की। श्री नेमिचंद्र निवाई परिवार पूज्य गुरुवर के दर्शनार्थ पधारे। पूज्य गुरुवर ने कहा, जिस प्रकार आकाश में, अनेक तारे होते हैं, लेकिन चंद्रमा का प्रकाश अलौकिक ही होता है, ऐसे ही यहाँ अनेक मंदिरों के

बीच में, अपना एक दिगम्बर जैन मंदिर चंद्रमा कि भांति शोभा को प्रदान करता है ।

सायंकाल हनुमान मंदिर (रानपाड़ा) विश्राम हुआ ।

(13/02/19) बुधवार पालीताणा शत्रुंजय बीसाहुमड धर्मशाला

(14/02/19) गुरुवार मानगढ़, शाम गरियाधार

(15/02/19) शुक्रवार चारोड़िया, शाम मोरींगंड़ा

(16/02/19) शनिवार मोरींगंडा चर्या

लेलीया में मुनि श्री 108 शुद्धात्मसागर जी, मुनि श्री 108 सिद्धात्मसागर जी एवं आर्यिका 105 संस्कृतश्री आर्यिका 105 संस्कृति श्री एवं क्षु. संस्तुति श्री माता जी का दीक्षा दिवस प्रातः काल मनाया।

(17/02/19) रविवार आहारचर्या लालवदर, अमरेली खादवाड़ी

- स्वाध्याय में पूज्य गुरुवर ने कहा- विद्या देना भाव देना है।
  - जब समस्या पैदा करने वाला मस्तिष्क होता है, तो समाधान करने वाला भी मस्तिष्क ही होता है ।
  - जितना जन संपर्क होगा, उतनी संयम की हानि होगी ।

(18/02/19) सोमवार पाणीया प्रवेश चर्या

आज पाणिया में प्रवेश हुआ गुरु जी ने अमृत वचन प्रदान किये।

- चंचल चित्त से जिनवाणी गिर जाती है ।
- जो चित्त को उज्ज्वल करदे वही प्रायश्चित्त है ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- जिस प्रकार तूफान से पत्ते, कागज उड़ जाते है, ऐसे ही निंदा, गर्हा आलोचना से दोष दूर हो जाते हैं ।
- विनय और प्रयास सबसे बड़ा मंत्र है ।
- जीवन में जब गुरु भक्ति होगी, तब उन्नति होगी ।

(19/02/19) मंगलवार बगसरा चर्या

- हम नहीं कहते पुण्य कमाओ, हम कहते है शुभ परिणाम बनाओ।
- प्रमाद पाप है, भोजन व्यसन है ।

(20/02/19) बुधवार पीपलिया चर्या

- मित्रता में पूज्यता नहीं रह जाती, यह पथ मित्रता का नहीं पूज्यता का है। पूज्यता को बनाये रखने के लिए साधुता आवश्यक है।
- गुरु को देखोगे तो गुरु बनोगे, मुनि को देखोगे तो मुनि बनोगे, मुनि के पास रहोगे तो मुनि बनोगे, भगवान बनना हो, तो अपने में रहो- सामायिक का काल भगवान बनने का काल है ।

(21/02/2019) गुरुवार विलख से चलकर पादडी भव्य मिलन

- सुबुद्धि का नाम राम है, कुबुद्धि का नाम ही रावण है।
- बोलने से ऊर्जा बाहर जाती है, नहीं बोलने से ऊर्जा भीतर रहती है ।
- विचार करें क्या हमारे इस विचार से समाधि हो सकती है?

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

सिद्धक्षेत्र गिरनार प्रवेश भव्य मिलन

(21/02/19) गुरुवार जूनागढ़ गुजरात, प्रवेश सांयकाल

गुरु शिक्षा सूत्र

गुरु से विहार यात्रा में शिक्षा

- जीभ पर रसगुल्ला पहुँचता है, तो चेहरा अलग होता है अगर मिर्ची रखे तो चेहरा अलग होता है- नमक रखे तो चेहरा अलग ही होता है, इसी तरह क्षमा में स्थित जीव का चेहरा अलग एवं क्रोध में स्थित जीव का चेहरा अलग ही होता है ।
- शुद्ध भाव बनाना ही समाधि है ।
- जिनवाणी व्यक्तिगत बातें नहीं होती है।
- कषायों के समाप्त होने पर जिनवाणी प्रकट हो जाती है ।
- सम्यग्दृष्टि जीव बिना संदर्भ के नहीं बोलता है ।
- हमारी चर्या जिनचर्या हो, हमारी वाणी जिनवाणी हो, हमारी क्रिया जिनक्रिया हो ।
- जो जिनवाणी नहीं, वह मुझे सुनना भी नहीं है, और सुनने में आ जाये तो समझना नहीं है ।
- मंच पर बोला गया प्रवचन मात्र प्रवचन नहीं होता है । जीवन होता हैं।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- साधु का हर एक वचन प्रवचन होता है, चाहे 2 में हो चाहे 200 मे हो । जैसे छोटे कमरे में किया गया भोजन भी भोजन है और हॉल में किया गया भोजन भी भोजन होता है ।
- समस्या कितनी भी बड़ी हो हल निकलेगा, आज नहीं तो कल निकलेगा।

सिद्धक्षेत्र गिरनार, गुजरात में पूज्य आचार्य द्वय आचार्य श्री सुनीलसागर जी और आचार्य श्री विभवसागर जी विहार करके पहुँचे । जिस घड़ी का इंतजार था वह घड़ी अब आ पहुची थी । हम सभी लम्बे समय से यह दृश्य देखने को आतुर थे कि बचपन के मित्र एक साथ वर्णी भवन मोराजी, सागर, मध्य प्रदेश में अध्ययन के पश्चात संदीप भैया तपस्वी सम्राट की छांव में धर्मसंस्कार पाकर निर्ग्रंथ दीक्षा को पाकर आज मुनिकुंजर श्री 108 आदिसागर जी महाराज के चतुर्थ पट्टाधीश होकर स्वंय और परम्परा को गौरवान्वित कर रहे है । ये आचार्य प्राकृताचार्य श्री 108 सुनीलसागर जी अपने विशाल चतुर्विध संघ सहित सिद्धक्षेत्र गिरनार से पधार रहे हैं। तो दूसरी ओर अशोक भैया गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी का आशीर्वाद पाकर श्रमण पद से श्रमणाचार्य पद की यात्रा कर चुके हैं। वे " तेरी छत्रच्छाया भगवान् मेरे शिर पर हो, मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो" समाधि भक्ति के सृजेता और संस्कृताचार्य आदि उपाधि पाकर संस्कृताचार्य श्री 108 विभवसागर जी महाराज अपने चतुर्विध संघ साहित पधार रहें है । दोनों आचार्यों का वात्सल्य पूर्ण मिलन पाकर यतिगण श्रावकगण स्वंय को धन्य-धन्य कह रहे है । द्वय आचार्य श्री की एक साथ चर्या हुई तथा दोपहर में सामायिक साथ में की, स्वाध्याय भी साथ- साथ हुआ एवं श्रमण मुनि श्री विकसन्तसागर श्रमण मुनि श्री

आवश्यकसागर श्रमणी आर्यिका समितिश्री भी आगवानी में पधारे। स्वाध्याय में द्वय गणधर परमेष्ठियों ने गुरु शिक्षा से ओत प्रोत संस्मरण सुनाये !

संस्कृताचार्य श्री विभवसागर जी ने कहा जब मैं आचार्य भगवन् सन्मतिसागर जी के दर्शन किये तब प्रश्न पूछा कि गुरुवर आज के युग में सब साधु अपने-अपने तीर्थ की रचना कर रहे है । सो आपके पास इतने धनाण्य भक्त आपकी आज्ञा में तीर्थ निर्माण कर देवेंगे। तब तपस्वी सम्राट मौन से मुखरित होकर बोले कि "मैं अपना पुण्य बेचता नहीं हूँ । इस बात को सुनकर हम सभी आनंद में डूब गए इतने महान थे। (हमारे दादा गुरुजी)

आचार्य श्री सुनील सागर जी बोले पू. गुरुवर सदैव साधना में स्थिर रहते थे । वे वातसल्य खूब देते थे लेकिन चर्या में शिथिलता उन्हें स्वीकार नहीं थी वे सदैव संयम में लगे रहते थे और शिष्यों को भी साधना में लगाए रहते थे। यहीं उन महायति की विशेषता है । तत्पश्चात पू. आचार्य द्वय ने अपनी-अपनी चर्चित कृति समाधि भक्ति और जिणवाणी भारदी थुदि अपनी आवाज में सबको सुनाई ।

इस कलिकाल में सभी ने समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत किया मिलन करके !

(22/02/19) **शुक्रवार**

जूनागढ़ से सिद्धभूमि गिरनार के लिए विहार, मिलन, प्रवेश

जूनागढ़ रात्रि विश्राम किया यहाँ तक साथ में श्रमण मुनि सुवन्ध सागर श्री माता जी साथ में जूनागढ़ आए क्योंकि उन्हें आगे अहमदाबाद को विहार करना था । सुवन्ध सागर, विकसन्त सागर जी से चर्चा भी हुई, 22/02/2019प्रातः काल जिनेन्द्र देव के दर्शन के बाद सभी ने अपने-अपने गन्तव्य के लिए प्रस्थान किया आचार्य श्री विभव

सागर जी ने पवित्र भूमि गिरनार के लिए विहार किया। गिरनार पहुँचने से पूर्व ही धवल वस्त्रों को धारण करने वाली उज्जवलमन से विचरण करने वाली गणिनी श्री शुभमति माता जी क्षु. सिद्धश्री माता जी ने भव्य आगवानी की। साथ ही गिरनार जी प्रवेश के साथ आचार्य भगवन् शांतिसागर जी छाणी की परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश गिरनार गौरव आचार्य निर्मल सागर जी महाराज के संघस्थ साधुओं ने आगवानी की। श्री समवशरण मंदिर पहुँचने पर पाया 52 वर्षों से दीक्षित आचार्य मानो लघुता से भरे हुए वात्सल्य का जीवंत उदाहरण बनकर द्वार पर कार्योत्सर्ग मुद्रा में मिले। प्रतिवंदन, आशीर्वाद रूपी अमृत वचन प्रदान किए। हम सभी शिष्यों ने आचार्यद्वय की वंदना की। तत्पश्चात वहाँ से चल कर बंडीलाल की धर्मशाला में आहार चर्या सम्पन्न हुई।

(22/02/19) शुक्रवार सांयकाल

पूज्य गुरुवर ससंघ गिरनारजी के पर्वत पर पहुँचे। पर्वत ऊपर स्थित बंडीलालजी की धर्मशाला में रात्रि विश्राम हुआ। 23-02-2019प्रातः बेला में महावीर के लघुनंदन 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन प्रवर्तन करने वाले पूज्य गुरुवर का 24वाँ ऐलक दीक्षा दिवस हम सभी ने वंदना करते हुए मनाया। सभी को गिरनार में गुरुवर का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

23/02/9) शनिवार पर्वत वंदना

सांयकाल में पहली टोंक पर विश्राम किया प्रातः काल पाँचवी टोंक सहित चौथी, तीसरी, दूसरी टोंकी की वंदना करके कर्मों की असंख्यात निर्जरा को प्राप्त हुए! गुरुवर ने शिष्यों को मंगल उद्बोधन दिया।

(25/02/2019) सोमवार श्री गिरनार भूमि से जूनागढ़

श्री गिरनार भूमि से जूनागढ़ के लिए विहार किया। पावन भूमियों से जाना अच्छा नहीं लगता। परन्तु साधु बहता पानी है। वहाँ से चल दिए। जूनागढ़ में गुफाऐ देखी। राजुल के महल का अवलोकन किया सुधार हेतु निर्देशन श्री गुरु मुख से प्राप्त हुआ। पुनः जूनागढ़ से विहार प्रारंभ हुआ।

- रोगी का आत्म बल बढ़ाने से बीमारी पराजित हो जाती हैं।
- श्रुतरूपी अमृत से चित्त को प्रसन्न करना चाहिए।
- 'धर्माय तनु, संयमाय तनु, धनाय तनु नहीं, व्यापाराय तनु नहीं।"
- पाने का लक्ष् य प्रकटाने के लिए है। पाने में पाप है, प्रकटाने वाला निष्पाप है।
- जो गाथा मुख में है, वह जीवन में चाहिए।
- उदय भाग्याधीन है, उपयोग पुरुषाधीन है।
- हमारे गुरु ने हमे कर्म नहीं ज्ञान दिया है, कर्म अनादि से है, उसको नहीं ज्ञान को भोगना हैं।
- गलती धूल पर लिखना चाहिए, अच्छाई शिलालेख पर लिखना चाहिए।
- हम आदेश न चलायें, आदेश में चले।
- हम सब अर्घ की तरह एक हैं। जिनशासन हम बढ़ायें, सब बढ़ायें।
- शुभ भाव उत्तम फसल की तरह है। अशुभ भाव खरपतवार की तरह है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(27/02/19) बुधवार आशापुरा आहार चर्या

(28/02/19) गुरुवार जैतपुर में चर्या हुई (पेट्रोल पम्प)

- रास्ते में पूज्य गुरुवर से किसी ने पुछा - गुरुवर क्या आपको यह पिच्छी भारी नहीं लगती ? पूज्य गुरुवर ने कहा- चाहे पिच्छी बड़ी हो या छोटी, मुझे भारी नहीं लगती क्योंकि पिच्छी भारी नहीं प्यारी होती है । उपकारी होती है । और उपकारी उपकरण कभी भारी नहीं होता है ।

संस्मरण

(01/03/2019) शुक्रवार जेतपुर आहार चर्या

- किसी ने पूज्य गुरुवर से पुछा - पिच्छी कौन- सी अच्छी होती है छोटी या बड़ी ? पूज्य गुरुवर ने कहा- पेन कौन-सा अच्छा होता है छोटा कि बड़ा? सभी ने कहा दोनों अच्छे होते है । तब पूज्य गुरुवर ने कहा पेन छोटा हो या बड़ा लिखने से मतलब होता है । ऐसे ही चाहे पिच्छी छोटी हो या बड़ी मार्जन करने से मतलब है । जीवों की रक्षा होनी चाहिए।

(02/03/2019) शनिवार गोंडल चर्या

- किसी ने पुछा - गुरुवर संघ का विभाजन कब होगा? गुरुवर ने कहा अभी भोजन करना है, भजन करना है इसलिए विभाजन नहीं करना।

(03/03/2019) रविवार, रामोद आहार चर्या

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- श्रावक ! बिना थाली लगाये भोजन करना चाहोगे तो पूरा भोजन नहीं कर पाओगे । उसी तरह पेन डायरी नहीं लाओगे तो आपका ज्ञान अधूरा है । थाली गिलास के बिना भोजन अधूरा है ।

(04/03/19) सोमवार ,ऑटको आहार चर्या

- संयम के लिए आहार लेते है । तप के लिए आहार त्याग करते है ।

संस्मरण

- रास्ते में गाय की चर्चा चल रही थी, कि गाय रखने की क्या आवश्यकता है? घर में दूध तो आ ही जाता है। तब पूज्य गुरुवर ने कहां पहले घरों में गाय रखते थे । सेवा करते थे । और आज हम गाय भी नहीं रखते, सेवा की तो बात दूर है । इसलिए आज के बच्चे माँ बाप की सेवा से दूर भागते है । अगर गोबर उठाया होता तो, आज गंदगी उठाने में हिचकिचाते नहीं और सेवा में सदा तत्पर रहते । तपोगे तो चमकोगे , जलोगे तो राख बनोगे ।

(05/03/19) मंगलवार , देवापुर आहार चर्या

- दोषों को ध्यान रूपी अग्नि में जलाओं, वही सही आहूती है ।

संस्मरण

- पूज्य गुरुवर विहार करते समय कहते हैं- अरे सात किलोमीटर चलके आ गये, पता ही नहीं चला, बस पाँच रह गया। मैंने आज सात किलोमीटर

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

गाया है, जब रीनोल्ड का पेन पाँच किलोमीटर चल सकता है, तो मैं सात किलोमीटर गा क्यों नहीं सकता, अर्थात् गा सकता हूँ।

- विचार और आचार का मापक यंत्र संयम है।
- गाड़ी वहाँ तक नहीं ले जाना, जहाँ तक का पेट्रोल हो, गाड़ी वहाँ ले जाना है, जहाँ घर हो। इसी तरह जीवन की गाड़ी वहाँ तक ले जाना है, जहाँ तक संयम है। अगर असंयम है, तो वही ब्रेक लगा देना।

06/03/2019) बुधवार, विछिंया आहार चर्या

- कोई भी वस्तु हो, हमारे लिए औषधि की तरह है।
- एक भी क्षण यदि गुरु के पास रहने मिल रहा है, तो समझना हमारा पुण्य उदय चल रहा है।
- जो माणिक, निधियाँ गुरु जी आपके पास हों, वह किसी और के लिए दे दो, लेकिन आशीर्वाद कि दस अंगुलियाँ हमारे ऊपर रख दो। गुरु की प्रतीक्षा हम करें, ये हमारा सौभाग्य है, गुरु शिष्य की प्रतीक्षा करे ये हमारा दुर्भाग्य है।
- आसादना दोष के कारण, गुरु से शिष्य दूर हो जाता है।
- करकस वचन आदि आदत नहीं आसदना हैं।
- संक्लेष से बोलना सरस्वती भाग हो जाती है।
- ईर्ष्या को जीतना हो, तो उदार बन जाओ।

(07/03/2019) गुरुवार , पालियाड चर्या

- अशुभ चिंतन कचरें के समान हैं।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- छोटी चर्या करना, बड़ी चर्या है ।
- आँख खुली शरीर जागा - आगम खुला आत्मा जागी ।
- आत्मा की बात के साथ, आत्मा से बात करो ।
- सबसे बात करो, लेकिन सबसे पहले अपने आप से बात करो।
- परमात्मा के चरणों में, याचना नहीं बचाना करो, याचना भिखारी करता है।
- जैसे श्रावक अपने सामान की रक्षा करते हैं । वैसे साधु को अपने आत्म संयम कि रक्षा करना चाहिए ।
- कषाय अपनों से और अपने से दूर कर देती है ।
- ये जीव अनादि काल से असत्य प्रशंसा का भोगी रहा है ।
- कविता अंतरंग की पीड़ा है, जो रिस, रिस के बहती है।
- संघ तो अज्ञानियों के बनते हैं, ज्ञानी का तो समवसरण लगता है।

(08/03/2019) शुक्रवार , उमरला आहार चर्या

- गुरु ज्ञान के हिमालय है , ज्ञान के हिमालय से ही ज्ञान की गंगा निकलेगी ।
- वचनों को औषधि की तरह प्रयोग करना सीखो।
- वही वात्सल्य, वात्सल्य है, जो प्रभावना कराये, शेष तो शिथलाचार है।
- धोती बड़ी होती है, इसलिए पैरों में पहनाई जाती है, टोपी छोटी होती है, इसलिए सिर पर पहनाई जाती है ।
- निंदक को जीतना हो तो, उसकी प्रशंसा करने लग जाओ ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- विद्या उसी की हो जाती है, जो विद्या की उपासना करता है।
- प्रवचन में दो मिनिट में वह बात मिल सकती है, जो जीवन भर काम आ सकती है।

09/03/2019) शनिवार , राणपुर चर्या

- जिसको समय कि चिंता नहीं, उसको किसी कि चिंता नहीं है ।
- बहुत अच्छा समय है, समयसार देखलो ।
- बाल अवस्था प्रथमानुयोग जानो (जानना) । युवा अवस्था करणानुयोग समझो (समझना)। प्रौढ़ अवस्था चरणानुयोग चलों (चलना)। वृद्ध अवस्था द्रव्यानुयोग करें (रमना)।
- तुम अपनी चर्या में रहो, देवता तुम्हारे चरणों में रहेंगे।
- देवों कि चर्या से तुम्हारी चर्या श्रेष्ठ होना चाहिए ।
- जितने समय, गुरु के पास नहीं, उतने समय शास्त्र के पास रहो ।
- बोलना हमारी असमर्थता कि निशानी है । और मौन लेने से रत्नत्रय रक्षा होती है।
- जगत् के बनना है, तो बोलो, अपना बनके रहना है, तो मौन रखो।
- जो हमारे मस्तिष्क को अशुद्ध भोजन दे रहा है, वह हमारा कल्याणकारी कैसे हो सकता है?
- धर्म का आचरण न कर पाना, धर्म का विनाश है ।

(10/03/2019) रविवार, कडोल श्वेताम्बर तीर्थ आहार चर्या

- चारित्रवान साधु से, विद्वान श्रावक श्रेष्ठ नहीं हो सकता ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- मोहनीय कर्म को जीतना तप है, न कि शरीर को सुखाना।
- कषाय विजेता साधुता, कषाय कर्ता असाधुता, इच्छा है तो असाधुता इच्छा नहीं है तो साधुता।
- जिससे आत्मा का हित न हो वह सब अशुभ इच्छा है।
- जरूरी नहीं कि हम बहुत उपवास करे, जरूरी है अशुभ इच्छायें न करें।

(11/03/2019) सोमवार , केदरा चर्या

- मुनिराज के वचन ही शांति धारा बन जाते है।
- कुआ का जल तालाब में आ जाता है, वैसे ही गुरु का ज्ञान शिष्य में आ जाता है।
- पुण्य के उदय में, पुण्य कर लेना, हमारी सफलता है।
- पाँचों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने का उपाय स्वाध्याय है।
- आलोचना हृदय भूमि को शुद्ध बना देती है।
- रूप की हानि में स्वरूप की हानि है। स्वभाव की हानि आत्मा की हानि है। विभाव का उत्पन्न होना, अपनी हानि है। जिनवाणी का विचार करना धर्म ध्यान है।
- साधु की सेवा में लगा एक कण भी सौधर्म इन्द्र बनाने की सामर्थ्य रखता है।

(12/03/2019) मंगलवार, वोरु छोटा आहार चर्या

- दूसरे के उत्तम विचार, कलम की तरह जोड़ लो।
- रिवीजन तो डिवीजन।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- पूर्वाचार्य का आतम उनके आगम है।

(13/03/2019) बुधवार , इन्द्रनज आहार चर्या

- जीव जुदा है, और पुद्गल जुदा है, यही जिनागम का सार है।
- आचार्य कहते है, ज्ञान को पाओ नहीं, ज्ञान में उपयोग लगाओ।
- ज्ञान जितने भीतर से निकलेगा उतना भीतर तक जायेगा।
- साधु ने अपने माता-पिता को छोड़ा, फिर क्रोध को क्यों नहीं छोड़ेंगे?
- अगर इंद्रिय और कषायों के अधीन न होगे तब अवशय होगे और अवशय होगे तभी आवश्यक कर पायेंगे।
- वह मत सोचो जिससे राग-द्वेष हो, वह मत देखो जिससे राग-द्वेष हो।

(14/03/2019) गुरुवार , अष्टमी तारापुर आहार चर्या

- सामायिक पुण्य की क्रिया है।
- परिणाम पवित्र होगे तो पुण्य होगा।
- जिसके पास सरस्वती होती है,उसके पास लक्ष्-मी दौड़ के आ जाती है।
- जब दवा की दो बूंदे आपको पूरे जीवन बीमार नहीं होने देती है, तो तीर्थंकर जिनदेव, देव की अमृतमयी प्रवचन की बूंदे आपकी आत्मा को बीमार कैसे होने देगी?
- जो जानना छोड़ देता है, संसार उसे छोड़ देता है।
- जो प्रश्न नहीं कर सकता वह स्वाध्याय के फल को प्राप्त नहीं कर सकता है।
- जो निर्भय होता है, वह निडर होता है।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- भाषा से अधिक हमारा भावों पर ध्यान जाना चाहिए ।
- रागी कंघी कराता है, राग कंगी कराता है शृंगार राग की पर्याय है । शृंगार राग की क्रिया है ।
- उत्तम दया से सहित को सदय कहते है ।
- प्रथम वचन का बहुत महत्व होता है, प्रथम शब्द आपके दिनभर का निर्णायक बनेगा।
- स्वाध्याय से संघ समृद्ध होता है ।
- जिनवाणी का चिन्ह स्याद्वाद है ।
- "सर्वविकार भाव रहिता सौम्या:" सभी विकार भाव से रहित को सौम्य कहते हैं।

(16/03/19) **शनिवार, चर्या**

- रोम पर नहीं, पर राम पर तो विश्वास करें, रोम पर भरोसा नहीं, पर ओम् पर विश्वास करो ।
- मेरी परीक्षा में, गुरु शिक्षा की परीक्षा होती है ।
- गुरु का श्रम हमें सफलता देता है । जो हमारी चिंता नहीं करते, हम उनकी चिंता करते है । जो किसी का ध्यान नहीं रखते हम उनका ध्यान धरते हैं ।
- " समणो सामाइयं " , श्रमण ही सामायिक है ।
- साधु कहलाने का अधिकार हमें हमारी सामायिक ने दिया ।

(17/03/19) **रविवार, अलकापुरी बडौदा चर्या -**

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- जितना आडंबर, उतना बमन्डर। धर्म सभा मंडप, सिद्धालय का आँगन है।
- जो महान जीव होते है, उनमें अभिमान नहीं पाया जाता है।
- यदि तुम एक पुत्र को उत्पन्न करने की क्षमता रखते हो तो एक परमात्मा स्थापित करने की क्षमता रखो।
- भागते हुए शत्रु का पीछा नहीं किया जाता।
- हस्त रेखा से, बड़ी शास्त्र रेखा है।
- जिसे कल्याण करना है, वह करता है, दीक्षा में उत्सव की क्या आवश्यकता है? उत्सव तो दीक्षा के बाद शुरु होते है।
- तत्त्व का निर्णय छूटता है, तो गुरु भक्ति छूटती है।
- मुझे सुख महावीर नहीं दे पायेंगे, मुझे सुख मेरा आत्मा देगा। जो तुमने पाया, वह मैं भी प्रकटाऊँगा अभी तक, परोपकार किया अब अपना उपकार करना है। (गौतम स्वामी)
- मोह रुलाता है, मोह झुलाता है। मोह भुलाता है।
- जब धर्म कमजोर होता है, तब कर्म बलवान होता है, जब धर्म बलवान होता है, तो कर्म कमजोर होता है।

(18/03/2019) सोमवार, दोपहर मूलाचार - अलकापुरी बड़ौदा

मोह के अभाव का नाम सामायिक है।

- विशुद्धि में रहने वाला जीव संयम स्थान पर जन्म लेता है, संक्लेशता में रहने वाला जीव असंयम स्थान पर जन्म लेता है।

- सामायिक करने से श्रावक, साधु बन जाता है ।
- सामायिक करने से साधु भगवान बन जाता

(19/03/19) मंगलवार, अलकापुरी चर्या

- जीव द्रव्य की शुद्ध पर्याय, सिद्ध पर्याय है ।
- भगवान और जिनवाणी का उपकार परोक्ष होता है । लेकिन गुरु का उपकार प्रत्यक्ष में होता है ।
- ज्ञान इंद्रिय का विषय नहीं है, आत्मा का है ।
- दुखी व्यक्ति को ज्ञान नहीं होता, मोही जीव को सुख नहीं होता है ।
- जीव स्वभाव में टिकता है तो ज्ञान को पाता है ।
- जहाँ मोह होता है, वहाँ दर्द होता है। पीड़ा का होना बताता है, कि मोह कितना है ।

(20/03/2019) बुधवार, सन्मति पार्क बड़ौदा चर्या

- मोह की मिट्टी के नीचे तुम्हारा ज्ञान जल बह रहा है ।
- स्वभाव का अभाव होता नहीं, अभाव स्वभाव होता नहीं ।
- ज्ञेय ज्ञान में आ जाये, यह सर्वज्ञता की निशानी है। ज्ञान ज्ञेय की ओर जाये तो, अज्ञता है।
- निर्ग्रंथता में कुछ पाया नहीं जाता प्रकटाया जाता है ।
- चौथे गुणस्थान में नाच लो ।

  पाँचवें गुणस्थान में गा लो ।

  छठवें गुणस्थान में ध्यान ध्या लो।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- सुख प्रकट करना हो तो, ध्यान करो।
- गृहस्थावस्था पाने की अवस्था है। साधु अवस्था प्रकटाने की अवस्था है।
- विशुद्धि के अभाव में जो बुद्धि आती है, वह कार्यकारी नहीं होती।
- जिस व्यक्ति से प्रेम से मिले, तो वह याद रहता है। ऐसे ही शास्त्र प्रेम से पढ़ोगे, तो शास्त्र याद रहेगा। शास्त्र बंद करने के पहले हमारी स्थिति ऐसी हो कि अभी और पढ़ले, तब शास्त्र याद रहेगा भले ही वह शास्त्र, फिर मिले या न मिले। अगर मिल जाये तो पुनः याद आ जाये, परिवार के सदस्य की तरह।

आचार्य समतासागर जी से मिलन

आहार चर्या स्वाध्याय सामायिक साथ किया।

(22/03/2019) **शुक्रवार , पावागढ़ प्रवेश सिद्ध क्षेत्र**

- चैतन्य स्थिति का नाम चिद् + छिदि है।

(23/03/2019) **शनिवार , पावागढ़ चर्या**

- सूर्य के उगने से, उल्लू को दुख होता है, तो हो। गुरु के डाँटने पर शिष्य को दुःख हो, तो हो।
- समता की छत बनालो तो, कोई असर नहीं पड़ेगा।
- प्रतिष्ठा करो या प्रतिष्ठित होओ।
- जिन-जिन से ममता बढ़े विशुद्धि वही याद आयें।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

मैं भी उनके पास में जाऊँ, वही पास आये ।।

- ज्ञान का फल वीतरागता प्राप्त करना है ।
- ग्रंथ अलमारी की शोभा न बने हृदय की शोभा बने ।
- जहाँ विशुद्धि छूटी, वहाँ परमात्मा का सहारा छूट जाता है ।
- अपने और दूसरे को अच्छा मानोगे तो विशुद्धि बनेगी बुरा मानोगे तो संक्लेश ।
- 28 मूलगुण में एक भी मूलगुण पराधीन नहीं है ।
- हर विषय की जानकारी लेना ज्ञान नहीं है ।
- क्रोध का त्याग करना अंतरंग त्याग है। मान का त्याग करना अंतरंग त्याग है। माया का त्याग करना अंतरंग त्याग है। लोभ का त्याग करना अंतरंग त्याग है।
- व्यक्ति को देखकर तप नहीं, अपनी प्रकृति को देखकर तप करना चाहिए।
- जितने तप से संक्लेश न हो उतना तप करो ।
- बुद्धि विद्वान बनाती है, विशुद्धि भगवान बनाती है ।
- धन सभी के पास होता है, लेकिन दान नहीं कर पाते उसी प्रकार ज्ञान सभी के पास होता है, लेकिन व्यक्त नहीं कर पाते । लेखन की कला सबके पास होती है, लेकिन सभी लिख नहीं पाते।
- प्रसन्नता आपके बल की परिचायक है ।
- ज्ञान कठिन नहीं है, कठिन है उपयोग लगाना ।
- तप का फल क्रोध नहीं शांति है।
- तप शक्ति के अनकूल होता है, वैय्यावृत्ति पात्र के अनुकूल होती है ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

(24/03/2019) रविवार, पावागढ़ चर्या

संस्मरण

- पूज्य गुरुवर ने कहा- चाहे हम गुजरात में हो या महाराष्ट्र में, आहार में - ओंरीया, मठा तो चलेगा ही, ऐसे ही चाहे हम कहीं भी रहें, स्वाध्याय तो चलेगा ही।
- गुरुवर के पास, पंड़ित कस्तूरचंद्र जी (वर्तमान में संघस्थ श्रमण श्री सागर) आये, उन्होंने कहा गुरुवर हम सागर से है, आप सागर चलो। तब पूज्य गुरुवर ने कहा तुम सागर से हो, हम सागर है। पूज्य गुरुवर ने कहा काम सस्ता नहीं, सदा के लिए करो। दूसरे वाक्य उच्-चरित हुये, मुझे प्रेरणा मिली, तुम्हें परिणाम मिलेंगे।
- रास्ते में एक व्यक्ति गुरुवर के श्री चरणों में आया और लेटकर नमस्कार करने लगा और बाद में कुछ पैसे देने लगा, गुरुवर ने नहीं लिए, अन्य महाराज जी को दिखाये, किसी ने नहीं लिए। अरे! जिसे श्रावक जन पर्स में छुपाकर रखते है, उसे गुरुवर स्पर्श भी नहीं करते, जिन्होंने परिधान का भी त्याग कर दिया हो, वह पैसे कहाँ रखेंगे? धन्य है गुरुवर, इसी का नाम है "मुनीनां आलौकिक वृत्ति। "
- स्थान पर पहुँचे, कक्ष में प्रवेश किया, किसी ने कहा- आसन यहाँ नहीं, यहाँ लगाओं यह दिशा ठीक है, गुरुवर ने कहा-दिशा के साथ हम अपने निर्धारित दशा भी देखना चाहिए।

(25/03/19) सोमवार , श्री अतिशय क्षेत्र बेडियाँ जी प्रवेश चर्या

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

पावागढ़ सिद्धभूमि से बडौदा के बाद एक क्षेत्र मिला जिसका नाम बेडियाँ है। नाम सुनते ही मन में कोलाहल मचता है। इस क्षेत्र का उद्धार सन्मति रत्न आचार्य जयसागर जी ने कराया है। देखने को हमारा सौभाग्य खिला।

आचार्य श्री जयसागर जी से पूछा इस क्षेत्र का नाम बेडियाँ क्यों है? तो उन्होंने कहा यह गाँव चारों ओर से बिडा हुआ। (बाउंडरी) या चारों ओर से कोट) था सो नाम पड़ा।

आचार्य द्वय के आहार साथ - साथ हुए सामायिक पश्चात स्वाध्याय में निवेदन किया - जयसागर जी से आप हमारे लिए शिक्षाएं प्रदान की "जो अपने गुरु का नहीं हो सकता वह किसी का क्या होगा" ? स्व संघ में दुःख नहीं होते डाँट से योग्य होते है" यदि साधु जीवन में दुःख है तो पर संघ से स्व संघ में नहीं। शिष्य को किसी भी परिस्थिति में गुरु और गुरु का संघ नहीं त्यागना चाहिऐं! आदि।

अचार्य श्री विभवसागर जी ने भी तपस्वी सम्राट सन्मति सागर जी के जीवन के संस्मरण प्रदान किऐ। उसके बाद विहार हुआ।

(26/03/2019) मंगलवार, गोधरा चर्या

- महिलाओं का बोलना अच्छा नहीं, मौन रहना ज्यादा अच्छा हैं।
- सुनी जायेगी जिनवाणी, पूजा जायेगा चारित्र।
- मजाक करने वाले समाधि में काम नहीं आयेंगे।
- चेहरे पर आया विषाद, हमारे अनिष्ट की सूचना हैं।
- समता गई साधुता गई।
- प्रत्येक विवाद का अंत स्याद्वाद हैं।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- प्रत्येक विवाद का प्रारंभ हठवाद है ।
- पिता गरीब हो या अमीर हो, अपना पिता अपना पिता होता है ।
- पर स्त्री, माता के समान, पर धन माटी के समान है।
- महान बनना है, तो अपने आप को समय दीजिए ।
- आचार्य भगवन ने संबोधन देते हुए कहा- " णमोकार मंत्र मुख्य मंत्र है, प्रधानमंत्र है, इसलिए जो इसका ध्यान करता है, वह प्रधानमंत्री है, वही मुख्यमंत्री भी है। हम यह संबोधन और संशोधन यह श्रम, स्वर्ग भेजने के लिए कर रहे है, समवशरण भेजने के लिए कर रहे है। "
- असंयमी का ज्ञान असंयम देता है । संयमी का ज्ञान, देता है ।
- चारित्रवान ज्ञानवान से महान होता है ।
- याचना लघु बना देती है।
- गुरु मुख से संयम का उपदेश यदि बंद हो जाये , तो आचरण, व्रत , संयम उगना बंद हो जायेगा ।
- गुरु का आशीर्वाद यदि मिलना बंद हो जाये तो शिष्य के जीवन में अकाल पड़ जाये यद्यपि शिष्य समाज से घिरा हुआ है ।
- जुवान और जीवन में बहुत अंतर हैं ।
- सरलता, सहजता, जिनके अंदर होती है, उनकी समाधि अच्छी होती हैं ।

(27/03/19) बुधवार , गोधरा से विहार

- आग शांत होती है पानी के द्वारा। विषयों कि आग शांत होती है ज्ञान के द्वारा।

- स्वरूप में जागने के लिए, सोना नहीं पड़ता है ।
- गुण को कैसे रहना चाहिए? जैसे द्रव्य रहे । शिष्य को कैसे रहना चाहिए? जैसे गुरु रहे।

(28/03/2019) गुरुवार , पंचेला चर्या

- पाप की कल्पना, पाप की ओर और पुण्य की कल्पना, पुण्य की ओर ले जाती है।
- अरिहंत के उपदेश के बिना कोई सिद्धत्व को प्राप्त नहीं हुआ, इसलिए अरिहंतों को पहले नमस्कार किया गया है।
- जिसको नमस्कार किया जाता है, उसे स्वपन में भी खंडित नहीं किया जाता ।
- प्रथमानुयोग आज्ञा प्रधान है, द्रव्यानुयोग तर्क प्रधान है।
- मौन ही संपूर्ण प्रयोजनों को साधने वाले है ।
- कषायों का त्याग ही साधुता है ।
- उचित स्थान पर बोलना सीखना है, तो अनुचित स्थान पर बोलना बंद कर दो।
- पुण्य से प्रभावित नहीं होना वैराग्य है ।

  पंडित : शब्द देता है।

  विद्वान : अर्थ देता है।

  ज्ञानी : भाव देता है ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- जिसको पाना है, वह निश्चय है, जिसके द्वारा पाना है, वह व्यवहार है।
- स्याद्वाद वह है, जो अपनी बात को गिरने नहीं देता ।
- जानना, मानना, जोड़ना, लगाना, देखना यह पाँच ज्ञान है ।
- औषधि मजबूरी है, जरूरी नहीं है ।
- संघ ममकार के लिए नहीं णमोकार के लिए हैं ।
- साधु स्वर्ग के झरने के समान है, शिष्य किसान के समान है।
- जिनवाणी की प्रत्येक गाथा आत्मा के संबोधन के लिए हैं। आत्मा का संबोधन दोषों के संशोधन के लिए है ।
- लोभ, लालच, विषधर के समान हैं । त्याग - वैराग्य मंत्र औषधि है

(29/03/19) **शुक्रवार, लिमखेड़ा चर्या**

- महल के निर्माण में कील से लेकर सबका महत्त्व होता है ।
- हमारा दाता ही माता है । नया शोध, नयी खोज होना चाहिए ।
- चिंतन से मार्ग निकलता है, चिंता से मार्ग बंद होता है ।
- भक्ति हृदय का विषय है, स्तुति उच्-चारण का विषय है।
- समयानुसार, समतानुसार कार्य करें ।
- असंतोष ही दरिद्रता है ।
- ख्याति ही खाई है ।
- माता-पिता का प्रेम, बच्-चे का विकास करता है ।
- वृद्धावस्था गेरिज की गाड़ी की तरह है ।

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई

- हमें आँखें आँसू ढाने के लिए नहीं मिली, हमें कलश ढारने के लिए मिली है।

(30/03/19) शनिवार , दाहोद गुजरात

- पवित्रता विहीन आनंद से प्रसन्नता नहीं हो सकती ।
- दीक्षा अवसाद नहीं प्रसाद है ।
- जब ज्यादा मार पड़ती है, तो मार याद नहीं आती, माँ की याद आती है।
- जैन कुल में जन्म लेना पंच परमेष्ठी की राजधानी में जन्म लेना है ।
- उसे देखो, जिसको देखने से आत्मा का कल्याण होता है । जिनरूप ही देखने योग्य है। जिनवचन ही सुनने योग्य है।
- कषाय की अग्नि को बुझाने के लिए ज्ञान का नीर चाहिए।
- जिसने गुरु को कष्ट दिया है, उसने सारे संसार को कष्ट दिया है।
  जिसने गुरु को सुखी रखा है, उसने सारे संसार को सुख दिया है।
- पाना है, तो संसार बहुत है, प्रकटाना हो तो रत्नत्रय है ।
- अपनी श्वास से भी गुरु को कष्ट नहीं होना चाहिए, आवाज की तो बात अलग है ।

(31/03/2019) रविवार, दाहोद (गुजरात)

- दो उपकारक द्रव्य है, एक तीर्थंकर दूसरे आचार्य तीर्थंकर चतुर्थकाल में उपकारी है, आचार्य भगवन पंचमकाल में उपकारी हैं ।
- पर्वत की ऊँचाई को, समुद्र की गहराई को नापा जा सकता है, लेकिन गुरु की गहराई को नहीं नापा जा सकता ।

- बेटे का जन्म दिवस माँ का उपकार दिवस है, शिष्य का दीक्षा दिवस, गुरु का उपकार दिवस है ।
- तपना शुद्धता की पहचान है, तप सूर्य की तरह करो, सूर्य केन्द्र में ठंडा रहता है बाहर में तपता है ।
- तनाव से निर्जरा नहीं होती है, आनंद में निर्जरा होती है ।
- जो रूप को चाहता है, वह बंधन में पड़ता है ।
- जो स्वरूप को चाहता है, वह बंधन में नहीं पड़ता है।
- जब तक बोलोगे तब तक बंधन में रहोगे। अगर बंधन से मुक्त होना हो तो मौन ले लो। जो प्रवचन तत्काल शांति देता है, वह त्रिकाल में शांति क्यों नहीं देगा? अवश्य देगा, आनंद भी देगा ।
- उपलब्धि के तीन उपाय है- राग-द्वेष, मोह मत करो ।

(31/03/19) रविवार, दाहोद गुजरात

महाराष्ट्र के महानगर मुम्बई से चेतन तीर्थों ने पद विहार किया वहाँ से श्री गजपंथा सिद्ध भूमि, श्री मांगीतुंगी सिद्ध भूमि से श्री आरिष्टनेमि भगवान की सिद्ध भूमि ऊर्जयन्तगिरि, गिरनारी की वन्दना के बाद पावागढ़, पुनीत और पावन बनाने वाली सिद्धभूमि , से चलकर गुजरात की धरा दाहोद में सर्व संघ सहित आचार्य श्री विभवसागर जी पधारे ।

अब आचार्य श्री ने यहाँ सर्व संघ में उपसंघ बनाने की बात कही आर्यिका रत्न ओम् श्री अर्हंश्री माता जी, क्षुल्लिका आराधना श्री का संघ बनायें संघ तो बने थे, पुनः आशीर्वाद प्रदान किया ।

सम्मेद श्रमण प्रभा भारत (रजि.) मुंबई

आचार्य श्री का केशलुंचन हुआ एवं आर्यिका अर्हं श्री माता जी का केशलोंच हुआ।

आचार्य श्री का विहार इंदौर (मध्य प्रदेश) के लिए हुआ। और आर्यिका ओम् श्री माता जी का विहार बांसवाड़ा (राजस्थान) के लिए हुआ।

आर्यिका अर्हं श्री माता जी ससंघ द्वारा दाहोद में ग्रीष्मकालीन वाचना हुई।

पूज्य संघ का इंचलकरंजी में भाव बना तब श्रावक श्रेष्ठी श्री मान् भागचन्द्र जैन ने मुम्बई तक विहार का सौभाग्य पाया।

इतने काल यहाँ पर ठहरे, अब हम जाते हैं।
तुम सबका कल्याण शीघ्र हो, वचन सुनाते हैं।।
नीति वाक्य यह मुनिराजों का सदा शुभंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।
तेरी छत्रच्छाया भगवन् मेरे सिर पर हो..

(परम पूज्य संस्कृताचार्य श्रमण श्री 108 विभव सागर जी महाराज की लोक प्रतिष्ठित कृति समाधि भक्ति से साभार उद्धृत..)

नमोस्तु शासन सेवा समिति (रजि.) मुंबई